कलकत्ता
२०१ हरिसन रोड के "नरसिंह प्रेस" में,
मैनेजर--पण्डित काशीनाथ जैन,
द्वारा मुद्रित।

श्री हंसराज बच्छराज नाहटा
सरदारशहर निवासी
द्वारा
जैन विश्व भारती, लाडनू
को सप्रेम भेंट -

शुद्धि पत्र ।

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्धि	शुद्धि
५	१६	बम्बी थावरकाय के पीछे	सप्पी थावरकाय चाहिये
१७	५	अनिवृत्ति बादर	निवृत्तिबादर
१७	६	निवृत्तिकर्ण	अनिवृत्तिकर्ण
२६	८	वावडेसे	तावडेसे
२६	१२	काजली	काजलकी
३३	६	हिसा	हिंसा
३८	४	बला	बेला
५०	१८	णिच्चाणप्पेहा	णिच्चाणुप्पेहा
५२	११	वाण-व्यतरां	वाण-व्यंतरां
५४	१८	सवर	संवर
५७	हेडिंग	धर्मध्यानी	धर्मध्यानको
५८	४	रूपो	रूपी
५६	१०	नामा	नाम
६०	हेडिंग	बन्धका तत्त्व	बन्धतत्त्वका
६५	७	वार्यवान	वीर्यवान
६६	७	स्फशना	स्फर्शना
६७	११	समाकत	समकित
६७	१६	माच	मोच

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्धि	शुद्धि
७६	८	नवर्त्ते	निवर्त्ते
८४	१६	परमाण	परमाणु
८८	४	परमाण	परमाण
१०५	११	संजागे	संजोगे
१०७	१२	किल्विपीकाना	किल्विपीकानाम
१२२	१६	मञ्जन	मंञ्जन
१२३	३	गैरूं	गैरू
१३३	७	लड़की	लकड़ी
१३४	२	अनथदण्ड	अनर्थदण्ड
१३६	६	ंवर	संवर
१३६	६	कायसा	वायसा
१४२	१०	(१)	१
१५६	१	विवण	विवर्ण
१६३	१०	खली	खुली
१६५	११	उगणी-	उगणीस
१७३	३	आचारे	आचरे
१७४	हेडिंग	किया	क्रिया -
१७५	११	साहित्थिया	साहत्थिया
१७६	१०	जीसको	जिसकी

॥ श्रीवीतरागाय नमः ॥

॥ अथ पच्चीस बोलको थोकड़ो लिख्यते ॥

* मङ्गलाचरण *

॥ श्लोक ॥

अर्हन्तो भगवंत इन्द्रमहिता सिद्धाश्चसिद्धिस्थिता
आचार्या जिनशासनोन्नतिकराःपूज्या उपाध्यायकाः
श्रीसिद्धान्तसुपाठका मुनिवरा रत्नत्रयाराधकाः
पंचैते परमेष्ठिनः प्रतिदिनं कुर्वन्तु वो मंगलम् ॥

॥ गाथा ॥

गइ जाइ कायेंदिय पज्जय पाणा तणुजोग उवओग कम्मं च । ठाणं इंदिय विसयं मिच्छा-तत्तायाचेव-दंडयखलु लेस्साज्झाणं च दिट्ठि ॥१॥ छयदव्व, रासि-गिहत्थवयाणि चरिणवयं चेव भंगं चरित्तं । एयाणि पणवीस पयाणि कहिओ सव्वण्णुना भगवया नायपुत्तेण ॥ २ ॥ चउ पञ्च छय पञ्च छय-दसगह पञ्च पन्नर बारस्स अट्ठ

च । चउदस तेवीस दस नव अट्ठ चउवीसं छय चउ तिरिह छय दो वि चेव ॥ ३ ॥ बारस वया समणोवासयाणं महव्वया पञ्च व तहा मुणिंदस्स । एगोणपन्नास भंग पञ्च चरियं णेयव्वा अस्सिं अणकम्म भेया ॥ ४ ॥

गइ—गति चार
जाइ—जाति पाच
काय—छकाय
इंद्रिय—इन्द्रिय पाच
पज्जय—पर्याप्ति छ
पाण—प्राण दश
तणु—शरीर पाच
जोग—जोग पनरह
उवयोग—उपयोग बारह
कम्म—कर्म आठ
ठाण—गुणठाण चउदह
इंद्रियविसय-इन्द्रिय विषय तेईस
मिच्छा—मिथ्यात्व दश
तत्त—तत्त्व नव
आया—आत्मा आठ
दण्डय—दंडक चोवीस
लेस्सा—लेश्या छ
दिट्ठि—दृष्टि तीन
ज्झाण—ध्यान चार
दव्व—द्रव्य छ
रासि—राशि दो
गिहत्थवयाणि-श्रावक व्रत बारह
वणिव्वयं—महाव्रत पांच
भङ्ग—भागा एगोणपचास
चारित्त—चारित्र पाच

१ पेहलेबोले गति च्यार।
२ दुजे बोले जात पांच।
३ तीजे बोले काय छव।
४ चोथे बोले इन्द्रिय पांच।
५ पांचमें बोले पर्याय (पर्याप्ति) छव।
६ छठे बोले प्राण दश।
७ सातमें बोले शरीर पांच
८ आठमें बोले योग (जोग) पन्नरह।
९ नवमें बोले उपयोग बारह।
१० दशमें बोले कर्म आठ।
११ इग्यारमें बोले गुणठाणा १४ (गुणस्थान चवदे)।
१२ बारमें बोले पांच इन्द्रियांकी तेवीस विषय।
१३ तेरमें बोले मिथ्यात्व दश और पनरह, कुल पच्चीस।
१४ चउदमें बोले नव तत्वको जाणपणो।
(छोटी नवतत्वका ११५ बोल, बड़ी नव-

तत्वका भेदानभेद घणा)

१५ पन्नरहमें बोले आत्मा आठ ।

१६ सोलमें बोले दंडक चोवीस ।

१७ सतरमें बोले लेश्या छव ।

१८ अठारमें बोले दृष्टि तीन ।

१९ उगणीशमें बोले ध्यान च्यार .

२० वीशमें बोले षट् (छव) द्रव्यका तीस भेद ।

२१ एकवीशमें बोले राशि दोय—जीव राशि, अजीव राशि ।

२२ बावीशमें बोले श्रावकरा बारह व्रत ।

२३ तेवीशमें बोले पांच महाव्रत साधुजीका ।

२४ चोवीशमें बोले गुणपचास भांगाको जाणपणो

२५ पचीशमें बोले चारित्र पांच (पांच प्रकारका)

॥ विस्तार सहित ॥

१ पहिले बोले गति ४, गति किसको कहते हैं? गति नामा नामकर्मके उदयसे जीवकी पर्याय

विशेषको गति कहते हैं। गतिके कितने भेद हैं? च्यार हैं:—नरकगति, तिर्यंचगति, मनुष्यगति, देवगति।

२ दुजे वोले जाति-५, जाति किसको कहते हैं? अव्यभिचारी सदृशतासे एक रूप करनेवाले विशेषको जाति कहते हैं। अर्थात वह सदृश धर्मवाले पदार्थोंको ही ग्रहण करता है। जातिके कितने भेद है? पांच हैं:—एकेन्द्रिय, वेन्द्रिय, तेन्द्रिय, चउरेन्द्रिय, पंचेन्द्रिय।

३ तीजे वोले काय-६, काय किसको कहते हैं? त्रस, स्थावर नाम कर्मके उदयसे आत्माके प्रदेश प्रचयको काय कहते हैं। कायके कितने भेद हैं? छव हैं—गोत्र-पृथ्वीकाय, अपकाय, तेउकाय, वायुकाय, वनस्पतिकाय, त्रसकाय। नाम—इन्द्रीथावरकाय, बंबीथावरकाय, सुमितिथावर काय, पयावचथावर काय, जंघम काय।

पृथ्वी काय–

माटो, हींगलु, हड़ताल भोडल, भाठो, हीरा, पन्ना आद् देइने सात लाख जात हैं, एक कांकरेमें असंख्याता जीव श्रीभगवंत फरमाया है, पृथ्वी कायरो वर्ण पीलो है स्वभाव कठोर है, संठाण मसुरकी दालरे आकार है, पृथ्वीकायका कुल १२ लाख क्रोड़ है, एक परजापतकी नेसराय असंख्याता अपरजापत है ।

अपकाय—

वरसाद-रोपाणी, ओसरो-पाणी, गड़ारो-पाणी, समुद्ररो-पाणी धवररो-पाणी, कुवा बावड़ीरो पाणी, आद् देइने सात लाख जात है; एक पाणीरी बुंदमें असंख्याता जीव श्रीभगवंत फरमाया है, एक पर्यासकी नेश्राय असंख्याता अपरजापत है, अपकायरो वर्ण लाल है; स्वभाव ढीलो है, संठाण पाणीके पपोटे माफक है, उसका कुल ७ लाख क्रोड़ है ।

तेउकाय—

अग्नि, झालको अगनि, बीजलीकी, अग्नि; वांसरी अग्नि उल्कापात आददेइने सात लाख जात है, एक अग्निरे चोणक (पतंग) में असंख्यात जीव श्रीभगवंत फरमाया है. एक प्रजापतकी नेसराय असंख्यात अप्रजापत है, तेउकायरो वर्ण सफेद है, स्वभाव उष्ण (गरम) है, संठाण सुइके भारे माफक है, सुइरी तरह अग्निनरी झाल नीचेसे मोटी उपरसे पतली, उसका कुल तीन लाख क्रोड़ है।

वाउ काय

उंडणीया वाय, मंडणीया वाय, घण वाय, तण वाय, पूरव वाय, पश्चिम वाय आद देइने तीन लाख जात है, एक फउंकमांहे (फुंकमें) असंख्याता जीव श्री भगवान फरमाया है, एक प्रजापतकी नेसराय असंख्याता अप्रजा-

पत है । वायुकायरो वर्ण सवज है (हरयो) स्वभाव वाजणो है, संठाण धजा (पताका) के आकार है । उसको कुल ७ लाख कोड़ है ।

वनस्पति काय–

बादरका २ भेद, प्रत्येक साधारण, वनस्पति कायको वर्ण कालो है, स्वभाव संठान नाना प्रकारका है, कुल २८ लाख कोड़ है, एक सरीरमें एक जीव होवे उसको प्रत्येक कहीये जैसे आम, अंगुर, केला, वड़ पीपल आद देइने १० लाख जात है । कन्दमूलकी जातिने साधारण वनस्पति कहिये, जैसे लशण, सकरकंद, अदरक, आलु रतालु मुला, कची-हल्दी, गाजर लीलण, फूलण आद देइने १४ लाख जात है ।

कन्दमूल–

एक सुईरे अग्रभागमें असंख्याता श्रेणी हैं, एक एक श्रेणीमें असंख्याता परतल है

एक एक परतलमें असंख्याता गोला है; एक एक गोलामें असंख्याता शरीर है, एक एक शरोरमें अनन्ता जीव है, निगोदको आउखो जघन्य और उत्कृष्ट अन्तर मुहूर्त्तको, चवे और उपजे।

त्रसकाय—

त्रसकाय जो जीव हाले चाले, छांयांसे तड़के आवे और तड़के से छायां जाय उसका च्यार भेद बेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय, चौरेन्द्रिय, पञ्चेन्द्रिय, बेन्द्री—एक काया, दूजो १ मुख ये दो इन्द्रिय होवे उसको बेन्द्री कहिये। जैसे—संख, कोडी, सीप, लट, कीड़ा, अलसिया, करमी (चूरणीया) वालो आददेइने दोय लाख जात है। उसका कुल ७ लाख क्रोड़ है।

२ तेइन्द्रिय—एक काय, दुजो मुख, तीजो नाक ये तीन इन्द्रिय होवे उसको तेइन्द्रिय कहिये जैसे, जूं, लीख, चांचड़, माकड़ कीड़ी, कुंथ-

वा, मकोड़ा, कानखंजुरा आद देइने दोय लाख जात है, उसका कुल ८ लाख क्रोड़ है।

३ चौरेन्द्रिय-एक कायां, दूजो मुख, तीजो नाक चौथी आंख ये च्यार इन्द्रीयां होवे उसको चौरेन्द्रिय कहिये जैसे—माखी डांस. मच्छर, भमरा; टीडी, पतंग्या, (पतंगीहा) कसारी आद देइने दोय लाख जात है। उसका कुल ९ नव लाख क्रोड़ है।

४ पञ्चेन्द्री—एक काय. दूजो मुख, तीजो नाक, चोथी आंख, पांचमो कान ये पांच इन्द्रियां होवे उसको पञ्चेन्द्री कहिये।

छवकाय एक महूर्त्तमें एक जीव उत्कृष्टा कितना भव करे? पृथ्वीकाय, अप्पकाय, तेऊकाय वाउकाय एक महूर्त्तमें उत्कृष्टा १२८२४ भव करे बादर वनस्पतिकाये एक महूर्त्तमें उत्कृष्टा ३२००० भव करे

सुक्ष्म वनस्पतिकाय एक मुहूर्त्तमें उत्कृष्टा

६५५३६ भवकरे

बेन्द्रिय एक मुहूर्त्तमें उत्कृष्टा ८० भव करे
तेन्द्री एक मुहूर्त्तमें " ६० " "
चौरेन्द्री " " " ४० " "
असन्नी पञ्चेन्द्रिय एक मुहूर्त्त २४ " "
सन्नी " " " " " १ " "

४ चोथे बोले इन्द्रिय ५ इन्द्रिय किसको कहते है ? आत्माके लिङ्गको (चिन्हक) इन्द्रिय कहते है । इन्द्रियके कितने भेद हैं ? पांच हैं—श्रोतेन्द्रिय चक्षुइन्द्रिय, घ्राणइन्द्रिय, रसइन्द्रिय, स्पर्श-इन्द्रिय (फरसइन्द्रिय) इनके नाम—गोचरी, अगोचरी, दुमोही, चरपरो, अचरपरी ।

५ पांचमें बोले पर्याय छव पर्याय किसको कहते हैं ? गुणके विकारको पर्याय कहते हैं । पर्यायके कितने भेद हैं ? छव है आहार पर्याय, शरीर पर्याय, इन्द्रिय पर्याय, श्वासो-श्वास पर्याय, भाषा पर्याय (वचनपर्याय) मन

पर्याय। एक पर्याय बने, एक पर्याय विगड़े उसको पर्याय कहिये।

६ छठे बोले प्राण १०, श्रोतेन्द्रिय बलप्राण, चक्षु-इंद्रिय बलप्राण, घ्राणइंद्रिय बलप्राण, रसइंद्रिय बलप्राण स्पर्शइन्द्रिय बलप्राण, मन बलप्राण, वचन बलप्राण, काया बलप्राण, श्वासोश्वास बलप्राण, आउखो बलप्राण। प्राण किसको कहते हैं? जिनके संयोगसे यह जीव जीवन अवस्थाको प्राप्त हो और वियोगसे मरण अवस्थाको प्राप्त हो, उनको प्राण कहते हैं।

७ सातमें बोले शरीर ५, औदारीक, वैक्रिय, आहारिक, तेजस, कारमण। उदारिक शरीर किसको कहते हैं? मनुष्य तिर्यंचके स्थूल शरीरको औदारिक शरीर कहते हैं; हाड़, मांस, लोही, रसी इत्यादिकसे बना हुआ है, इसका स्वभाव गलना, सड़ना, विध्वंस (विनाश) पानेका है।

वैक्रिय शरीर किसको कहते हैं ? जो छोटे, बड़े, एक, अनेक आदि नाना प्रकारके शरीरको करे, देव और नारकियोंके शरीरको वैक्रिय शरीर कहते हैं; अथवा सड़े नहीं, पड़े नहीं, विनास पामे नहीं, विगड़े नहीं, मरनेके बाद कपूरकी तरह विखर जाय, उसको वैक्रय-शरीर कहते हैं।

आहारिक शरीर किसको कहते हैं ? छट्ठे गुणस्थानवर्ती मुनिके तत्वोमें कोई शङ्का होनेपर केवली या श्रुत केवलीके निकट जानेके लिये मस्तकमेंसे जो एक हाथका पुतला निकलता है. (कोई लब्धि धारी मुनिराज अप्रमोद करीने ज्ञान भएया प्रमाद करीने ज्ञान विसरजन हो गया कोई विचक्षण चतुर पुरुष आयने प्रश्न पुछयो उस वखत, मुनिराजको उपयोग लाग्यो नहीं जद आपरे शरीर मांयसुं एक हाथरो पूतलो निकाल्यो उस पूतलेको

जहां तिर्थंकर महाराज या केवली महाराज होवे उठे भेज्यो उठेसे तिर्थंकर महाराज या केवली महाराज विहार कर गया तब वहांपर उस एक हाथके पुतलेमें से मुण्डे हाथका पुतला निकला जहां पर तिर्थंकर महाराज व केवली महाराज थे वहांपर जाकर प्रश्नका उत्तर लेकर मुण्डे हाथका पुतला एक हाथके पुतले में समा गया, एक हाथका पुतला मुनिराजके शरीरमें समा गया, तब मुनिराजने प्रश्नका अन्तर मुहूर्त्तमें जवाब दिया; मुनिराज अहारिककी लब्धि फोड़ी (पुतलो निकाल्यो) उसकी आलोवणा किया बिगर काल प्राप्त हो जाय तो विराधीक और आलोवना कर ले तो आराधिक) तेजस शरीर किसको कहते हैं? अहारको ग्रहण करके पचावे उसको तेजस शरीर कहते हैं।

कारमाण शरीर किसको कहते हैं? ज्ञानावर-

णादि अष्ट कर्मोंके समूहको कारमाण शरीर कहते हैं। संसारी जीवके तेजस, कारमाण शरीर हर वक्त साथ ही रहते हैं।

आठमें बोले योग (जोग) १५ ; योग किसको कहते हैं ? पुद्गल विपाकी शरीर और अंगोपांग नामा नाम कर्मके उदयसे मनोवर्गणा वचनवर्गणा कायवर्गणा (आहारवर्गणा तथा कार्मण वर्गणा अवलम्बनसे कर्म नोकर्मको ग्रहण करनेकी जीवकी शक्ति विशेषको भावयोग कहते हैं। इस ही भावयोगके निमित्तसे आत्म प्रदेशके परिस्यंदको (चञ्चल होनेको) द्रव्य योग कहते हैं।

योगके कितने भेद हैं ? पन्नरह हैं—१ सत्यमनो योग, असत्यमनोयोग, ३ मिश्रमनोयोग, (उभयमनोयोग), ४ व्यवहार मनोयोग (अनुभयमनो योग), ५ सत्यभाषा, ६ असत्य भाषा, ७ मिश्रभाषा, ८ व्यवहार भाषा, ९ औदा-

रिक, १० औदारिकमिश्र, ११ वैक्रियक, १२ वैक्रियक मिश्र, १३ आहारक, १४ आहारक मिश्र, १५ कार्माण।

नवमें बोले उपयोग १२—पांच ज्ञान, तीन अज्ञान, च्यार दर्शन; १ मतिज्ञान, २ श्रुतज्ञान, ३ अवधिज्ञान, ४ मनः पर्यवज्ञान, ५ केवलज्ञान, ६ मतिअज्ञान, ७ श्रुतअज्ञान, ८ विभंगज्ञान (कुअवधिज्ञान), ९ चक्षु दरसण, १० अचक्षु दरसण, ११ अवधि दरसण, १२ केवल दरसण।

१० दसमें बोले कर्म आठ,—१ ज्ञानावर्णीय, २ दर्शनावर्णीय, ३ वेदनीय, ४ मोहनीय, ५ आयु, ६ नाम, ७ गोत्र, ८ अंतराय। कर्म किसको कहते हैं? जीवके राग द्वेषादिक परिणामोंके निमित्तसे कार्माण वर्गणा रूप पुद्गलस्कंध जीवके साथ बंधको प्राप्त होते हैं, उनको कर्म कहते हैं।

११ इग्यारमें बोले गुणस्थान चवदे-१ मिथ्यात्व, २ सास्वादन, ३ मिश्र, ४ अविरतिसम्यक्द्दष्टी ५ देशविरति, ६ प्रमतविरति (प्रमादी), ७ अप्रमतविरति (अप्रमादी), ८ अपूर्वकर्ण (अनिवृत्तिवादर), ९ अनिवृत्तिवादर (निवृत्तिकर्ण), १० सूक्ष्मसम्पराय, ११ उपशांतमोहिनीय, १२ क्षीण मोहनीय, १३ संयोगोकेवली, १४ अयोगी केवली। गुणस्थान किसको कहते हैं? मोह और योगके निमित्तसे सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान और सम्यक्चारित्र रूप आत्माके गुणोंको तारतम्यरूप अवस्था विशेषको गुणस्थान कहते हैं।

१२ बारमे बोले पांच इंद्रियोंका तेवीस विषय—२४० विकार।

-इन्द्रियके विषय—

१ श्रोतेन्द्रियका तीन विषय—१ जीव शब्द, २ अजीव शब्द, ३ मिश्र शब्द।

२ चक्षुइन्द्रियका पांच विषय—१ कालो (वर्ण) २ नीलो, ३ रातो, ४ पीलो, ५ धोलो ।

३ घ्राणेंद्रियका दोय विषय—१ सुरभी गंध, २ दुरभीगन्ध ।

४ रसेंद्रियका पांच विषय—१ तीखो (रस), २ कड़वो, ३ कसायलो, ४ खट्टो, ५ मीठो ।

५ स्पर्शेन्द्रियका आठ विषय—१ खरखरो (फरस), २ सुंहालो, ३ भारी, ४ हलको, ५ ठंढो ६ उनो, ७ चोपड्यो, ८ लुखो ।

प्रश्न—शरीरमें खरखरी क्या ? उत्तर-पगरी एडी ; सुहालो क्या ? गलेरो तालवो ; भारी क्या ? शरीरमें हाडका ; हलका क्या ? केश ; ठंढो क्या ? कानको लोल ; उनो क्या ? कालजो ; चोपड़ी क्या ? आंख ; लुखो क्या ? जीभ ।

—२४० विकार—

१२ विकार श्रोतेन्द्रियके—१ जीव शब्द, २ अ-

जीव शब्द, ३ मिश्र शब्द, ए ३ शुभ ३ अशुभ ए छव; ६ उपर राग ६ उपर द्वेष ए बारह।

६० विकार चक्षुइन्द्रियके पांच विषयका-५ सचित्त, ५ अचित्त, ५ मिश्र, ए १५ शुभ १५ अशुभ, ये तीस ३० उपर राग, ३० उपर द्वेष ए साठ।

१२ विकार घ्राणेन्द्रियके दोय विषयका—२ सचित्त, २ अचित्त, २ मिश्र, ए छव, ६ उपर राग ६ उपर द्वेष ए बारह।

६० विकार रसेन्द्रियके पांच विषयका—५ सचित्त, ५ अचित्त, ५ मिश्र, ए पनरा, १५ शुभ १५ अशुभ १५ अशुभ ए तीस, ३० उपर राग ३० उपर द्वेष ए साठ।

९६ विकार स्पर्शइन्द्रियके आठ विषयका—८ सचित्त, ८ अचित्त, ८ मिश्र, ए २४ शुभ २४ अशुभ, ए अडतालीस, ४८ उपर राग (४८ उपर द्वेष ए छनवे।

१३ तेरमें बोले मिथ्यात्वरा १० और १५=२५ बोल (याने पचीस प्रकार)

१ अभिग्रह मिथ्यात्व ते अपने ध्यानमें आवे सो साचा, अर्थात् अपना ही मन मान्यां माने ।

२ अनाभिग्रह मिथ्यात्व ते हठग्राही तो नही, परन्तु सत्य असत्यका निर्णय नहीं कर सके, एक ही नहीं माने।

३ अभिनिवेश मिथ्यात्व ते अपणी लोधी टेक छोडे नहीं ।

४ संशय मिथ्यात्व ते डामाडोल चित्त राखे, संशय करे, निश्चय नहीं लावे, धर्म अहिंसा लक्षण है कि नहीं इत्यादिक मतिद्वै विध्य को संशय मिथ्यात्व कहते हैं ।

५ अणाभोग मिथ्यात्व अज्ञान पणा से लागे, उपयोग सुन्य भावे (सुन्य उपयोगपणे) ।

६ लौकिक मिथ्यात्वके ४ भेद—(१) देवगत

मिथ्यात्व भैरू, भवानी इत्यादि देव माने, (२) गुरुगत मिथ्यात्व गंगागुरु इत्यादि गुरु माने, (३) धर्म्मगत मिथ्यात्व नदी आदि स्नानमें धर्म्म माने, (४) पर्वगत मिथ्यात्व होली दशहेरादि पर्व माने।

७ लोकोत्तर मिथ्यात्वका ४ भेद—देव, गुरु, धर्म, पर्व। देव—अट्ठारे दोष रहित, गुरु निग्रंथ, धर्म्म—दया मूल, पर्व—जिन कल्याणक दिन वा ज्ञान दर्शन, चारित्र, साधनके दिन, पज्जुसण इन उत्तम को इस लोकके सुखार्थे माने तो लोकोत्तर मिथ्यात्व।

८ कुप्रावचन मिथ्यात्व इसके ४ भेद—देव हरिहर ब्रह्मादि; गुरु-बावा जोगी आदि; धर्म्म-स्नान, जप, होम आदि; पर्वलोकीक कार्य माने वो उनके शास्त्रोंको माने, सो कुप्रावचन मिथ्यात्व।

९ उणो मिथ्यात्व-श्रीवीतराग प्रभु परूपणा करी उनसे ओछा प्ररुपे वा ओछा श्रद्धे । जैसे कोइ कहे जीव अंगुठा मात्र है, तंदुल मात्र है, शामा मात्र है, दीपक मात्र है ऐसी ओछी परूपणा करे सो मिथ्यात्व ।

१० अधिको मिथ्यात्व-श्री वीतरागके परुप्या सूत्रसे अधिक परुपणा करे सो । जैसे कि एक जीव सर्व लोक ब्रह्माण्ड मात्र में व्यापि रह्यो अधिक परूपणा करे सो मिथ्यात्व ।

११ विपरीत मिथ्यात्व—श्री भगवंत भाष्या अर्थ से विपरीत श्रद्धे वा परुपे सात नीन्हवनी परे ।

१२ धर्म्म को अधर्म समझे, जैसे-सत्य, दया, मूल धर्म श्री भगवानने फरमाया उसको न माने सो मिथ्यात्व ।

१३ अधर्मको धर्म्म समझे जैसे कन्या दान, यज्ञ होमादिकमें सो मिथ्यात्व ।

१४ साधुको कुसाधु समझे सो मिथ्यात्व, जैसे

गुण संयुक्त ज्ञानी दानी तपस्वी क्षमावान्, वैरागी, जीतेन्द्रिय, ऐसे उत्तम गुणों के धारक कुं मत पक्ष करके द्वेष बुद्धि सुं असाधु समझे या श्रद्धे सो मिथ्यात्व ।

१५ असाधु को साधु समझे सो मिथ्यात्व, जैसे-प्राणातिपातादि, अट्ठारे पापस्थानक सेवे, सेवावे, अनुमोदे, जिन आज्ञासे विरुद्ध वर्तने वालोंको साधु श्रद्धे सो मिथ्यात्व ।

१६ जीव कुं अजीव समझे सो मिथ्यात्व, जैसे-पर्याय, प्राण, योग, उपयोगादिधारक, एकेन्द्रिय आदि जीव को अजीव समझे या श्रद्धे सो मिथ्यात्व ।

१७ अजीव को जीव समझे सो मिथ्यात्व, जैसे सुका काष्ट निर्जीव पाषाण, वस्त्र इनको जीवका आकार बनायकर उसे जीव श्रद्धे सो मिथ्यात्व ।

१८ मार्गको उन्मार्ग समझे सो मिथ्यात्व, जैसे-शुद्ध निर्दोष, सरल, सत्य, मोक्षमार्ग, ज्ञान, दर्शन, चारित्र, तप, दया, शील, दान संतोष, क्षमा, इत्यादिक को कर्म्म-बंधका, संसारमें रुलानेका मार्ग बतावे, दया दान उत्थापे सो मिथ्यात्व।

१९ उन्मार्गको मार्ग श्रद्धे, सो मिथ्यात्व; जैसे-सातकुव्यसन का सेवन, काम क्रीड़ा करना, स्नान इत्यादि संसारमें परिभ्रमण करानेका जो मार्ग है, उनको मोक्षका हेतु श्रद्धे सो मिथ्यात्व।

२० रूपी पदार्थको अरूपी श्रद्धे सो मिथ्यात्व, जैसे-वायुकायादि सूक्ष्म होनेसे दृष्टि न आवे उनको अरूपी श्रद्धे सो मिथ्यात्व।

२१ अरूपीको रूपी समझे तो मिथ्यात्व, जैसे-धर्मास्तिकायादि जो अरूपी है उनको रूपी श्रद्धे सो मिथ्यात्व।

२२ अविनय मिथ्यात्व—जिनेश्वर तथा गुरुका वचन उत्थापे, गुणवन्त, ज्ञानवन्त, तपस्वी, वैरागी इत्यादि उत्तम पुरुषोंसे कृतघ्नीपणो करे, छिद्र देखता रहे, निन्दादि अविनय करे सो मिथ्यात्व।

२३ आशातना मिथ्यात्व—गुरुकी ३३ आशातनाका काम करे सो मिथ्यात्व।

२४ अक्रिया मिथ्यात्व—जैसे प्रतिक्रमणादिक क्रिया न माने सो मिथ्यात्व।

२५ अज्ञान मिथ्यात्व—जैसे सत्य असत्यका विवेक न होनेसे संसारिक कार्य कर्म्मोंका बंधन रूप जैसाका तैसा रहनेसे और सत्य ज्ञानका अभावसे अज्ञानको थापे सो मिथ्यात्व। जैसे पशुवध को धर्म समझे।

१४ चवदमें बोले नवतत्वको जाण पणो।

नवतत्वका नाम—१ जीवतत्व, २ अजीव-

तत्व, ३ पुण्यतत्व, ४ पापतत्व, ५ आश्रवतत्व, ६ संवर तत्व, ७ निर्झरातत्व, ८ बंधतत्व, ९ मोक्षतत्व ।

जीवतत्व ।

१ जीवतत्व किसको कहिये ? जीव चेतना सहित, सुख दुखका वेदक, पर्याप्ति प्राणका धरता, आठ कर्मका कर्ता, आठ कर्मका भोक्ता, सदाकाल सास्वता रहे, कदेही विनसे नहीं, छायांका तावड़े जाय, तावड़ेसे छायां आवे, असंख्यात प्रदेशी, उसको जीव तत्व कहिये । जीवका दोय भेद १ सुक्ष्म २ बादर ।

सुक्ष्म जीव किसको कहिये ? लोक माहें काजली कुंपली समान भरया छे, काट्या कटे नहीं, बाढ्या बढे नहीं, जाल्या जले नहीं, पानीमें डूबे नहीं आयुष आया मरे, विना आयुष्य मरे नहीं, केवल ज्ञानीके नजर आवे, छदमस्थके नजर आवे नहीं, उसको सुक्ष्म एकेन्द्रिय कहिये ।

बादर जीव किसको कहिये? लोकके देशमें रह्या है। काट्या कटे, बाढ्या बढे, जाल्या जले, पानीमें डुबे, आयुष्य आयां मरे, व्यवहारमें बिना आयुष्य भी मरे, केवलज्ञानीके नजर आवे; छदमस्थके नजर आवे. एकका दोय भाग होवे, उसको बादर जीव कहिये।

संसारी जीवका १४ भेद

सूक्ष्म एकेन्द्रियका	२	भेद	अप्रजापता,	प्रजापता,
बादर एकेन्द्रियका	"	"	"	"
बेइन्द्रियका	"	"	"	"
तेइन्द्रियका	"	"	"	"
चौरिन्द्रियका	"	"	"	"
असन्नी पंचेन्द्रियका	"	"	"	"
सन्नी पंचेन्द्रियका	"	"	"	"

अजीव तत्व।

अजीव तत्व किसको कहिये? चेतना रहित, सुख दुखको वेदे नहीं, प्रज्ञा, प्राण, जोग, उप-

योग, आठ कर्म करके रहित, जड़ लक्षण उसको अजीव तत्व कहिये। अजीवका भेद चवदा। धर्मास्तिकायका तीन भेद—१ खन्ध, २ देश, ३ प्रदेश। अधर्मास्तिकायका तीन भेद—१ खंध, २ देश, ३ प्रदेश। आकाशास्तिकायका तीन भेद—१ खंध, २ देश, ३ प्रदेश ये नव, (१०) दशमो काल, ये दश अजीव अरूपी जाणना। रूपी पुद्गलका च्यार भेद—१ खंध, २ देश, ३ प्रदेश, ४ प्रमाणु पोगला, ये च्यार पुद्गलास्तिकायका हुआ। एवं यह कुल चवदा भेद अजीवका हुआ।

पुण्य तत्व।

पुण्य तत्व किसको कहिये? पुण्यकी प्रकृति शुभ, पुण्य बांधता दोहिलो; भोगवतां सोहिलो, सुखे २ भोगवे, शुभ जोगसे बांधे, शुभ उज्वल पुद्गलां को बंध पड़े, पुण्य प्राणीने उजला करे, पुण्य सोनाकी बेड़ी, पुण्यका फल मीठा, उसको

पुण्य तत्व कहिये। पुण्य नव प्रकारे बांधे—

१ अन्न पुण्ये—अहार देनेसे।

२ पाण पुण्ये—पाणी देनेसे।

३ लयन पुण्ये-जगह स्थानक वगैरह देनेसे।

४ सयन पुण्ये—सज्या, पाट, पाटला, बाजोटा, वगैरह देनेसे।

५ वस्थ (वस्त्र) पुण्ये—वस्त्र, कपड़ा देनेसे।

६ मन पुण्ये—शुभमन राखनेसे, दानरूप, शीलरूप, तपरूप, भावनारूप, दयारूप. आद देईने शुभ मन राखनेसे।

७ वचन पुण्ये—मुखसे शुभ वचन बोलनेसे व अच्छा वचन निकलनेसे।

८ काय पुण्ये—कायासे दयापालनेसे, कायासे सेवा चाकरी, विनय, वैयावच्च करनेसे।

९ नमस्कार पुण्ये—उत्तम गुणवन्त को नमस्कार करनेसे।

च्यार कर्मके उदय ४२ प्रकारे भोगने (एक

सो अड़तालीस प्रकृतिमें से शुभ शुभ)—

शातावेदनीयकी एक, आयुष्यको तीन, नामकी सैंतीस, गौत्रकी एक, यह बयालीस प्रकृति ।

पाप तत्व ।

पापतत्व किसको कहिये ? पाप बांधता सोहिलो, भोगवतां दोहिलो, अशुभ योगसे बंधे, दुःखे २ भोगवे, पापका फल कड़वा, पाप प्राणीने मेलो करे, उसको पापतत्व कहिये । पाप अठारह प्रकारे बांधे ।

१ प्राणातिपात—छव कायाके जीवोंको हिंसा करे ।

२ मृषावाद—असत्य (झूठ) बोले ।

३ अदत्तादान—अणादधी वस्तु लेवे (चोरी करे) ।

४ मैथुन—कुकर्म (कुशील) सेवे ।

५ परिग्रह—द्रव्य (धन) राखे; ममता करे ।

६ क्रोध—आप तपे, दूसराने तपावे. कोप करे ।

७ मान—अहंकार (घमंड) करे ।

८ माया—कपटाइ, ठगाइ करे ।

९ लोभ—तृष्णा वधावे, मूर्च्छा (गृद्धिपणो) राखे ।

१० राग—स्नेह राखे, प्रीति करे ।

११ द्वेष—अणगमति वस्तु देखीने द्वेष करे ।

१२ कलह—क्लेश करे ।

१३ अभ्याख्यान—झूठा कलङ्क (आल) देवे ।

१४ पैशुन्य—दूसरेकी चाड़ी, चुगली करे ।

१५ परपरिवाद—दूसराका अवर्णवाद बोले ।

१६ रति अरति—पांच इन्द्रियकी तेवीस विषय उसमेंसे मनगमतिसे राजी होवे । अणगमतिसे नाराजी होवे ।

१७ माया मृषावाद—कपट सहित झूठ बोले, कपटाइमें कपटाइ करे ।

२ अव्रत आश्रव याने व्रत पच्चखाण नहीं करे सो आश्रव ।

३ प्रमाद याने पांच प्रमाद सेवे सो आश्रव ।

४ कषाय याने पच्चीस कषाय सेवे सो आश्रव ।

५ अशुभ जोग प्रवर्तावे सो आश्रव ।

६ प्राणातिपात-जीवकी हिंसा करे सो आश्रव ।

७ मृषावाद—झूठ बोले सो आश्रव ।

८ अदत्तादान—चोरी करे सो आश्रव ।

९ मैथुन—कुशील सेवे सो आश्रव ।

१० परिग्रह—धन, कंचन, वगैरह राखे सो आश्रव ।

११ श्रोतेन्द्रिय मोकली मेले सो आश्रव ।

१२ चक्षुइन्द्रिय मोकली मेले सो आश्रव ।

१३ घ्राणेन्द्रिय मोकली मेले सो आश्रव ।

१४ रसेन्द्रिय मोकली मेले सो आश्रव ।

१५ स्पर्शेन्द्रिय मोकली मेले सो आश्रव ।

१६ मन मोकलो मेले सो आश्रव ।

१७ वचन मोकलो मेले सो आश्रव।

१८ काया मोकली मेले सो आश्रव।

१९ भंडउपगरण अजयणासे लेवे अजयणासे मुके (रखे) सो आश्रव।

२० सुई कुसग्ग मात्र अजयणा से लेवे अजयणा से रखे सो आश्रव।

ये सामान्य प्रकारे वीस भेद तथा विशेष प्रकारे बयालीस तथा सत्तावन भेद—५ इन्द्रिय का विषय, ४ कषाय, ३ अशुभ जोग, २५ क्रिया, ५ अव्रत, ये ४२ भेद तथा कोई कोई सत्तावन भेद पण कहते हैं बयांलीस तो उपर सुजब और १५ जोग ये ५७ सत्तावन हुआ।

संवर तत्त्व।

संवर किसको कहिये? जीवरूपीयो तलाव, कर्म रुपीयो पाणी, आश्रवरूप नालो, संवररूपी पाल करके आवतां कर्मोको रोके उसको संवर तत्व कहिये।

संवरका सामान्य प्रकारे बीस भेद—

१ समकित संवर।

२ व्रत पच्चखाण करे सो संवर।

३ अप्रमाद संवर।

४ अकषाय संवर।

५ शुभ जोग प्रवर्तावे सो संवर।

६ प्राणातिपात जीवकी हिंसा नहीं करे सो संवर।

७ मृषावाद—झूठ नहीं बोले सो संवर।

८ अदत्तादान—चोरी नहीं करे सो संवर।

९ मैथुन—कुशील नहीं सेवे सो संवर।

१० परिग्रह—ममता नहीं राखे सो संवर।

११ श्रोतेन्द्रिय वश करे सो संवर।

१२ चक्षुइन्द्रिय वश करे सो संवर।

१३ घ्राणेन्द्रिय वश करे सो संवर।

१४ रसेन्द्रिय वश करे सो संवर।

१५ स्पर्शेन्द्रियं वश करे सो संवर।

१६ मन वश करे सो संवर।

१७ वचन वश करे सो संवर।

१८ काया वश करे सो संवर।

१९ भंड उपगरण जयणासे लेवे जयणासे मुके (रखे) सो संवर।

२० सुइ कुसग्ग मात्र जयणा से लेवे जयणासे रखे सो संवर।

विशेष प्रकारे सत्तावन भेद कहते हैं—५ सुमति, ३ गुप्ति, २२ परिसह, १० प्रकारे यतिधर्म, १२ भावना, ५ चारित्र ये सत्तावन।

॥ अथ निर्जरा तत्वके भेद लिख्यते ॥

निर्जरा तत्व किसको कहिये? जीवरूपी कपड़ा, कर्मरूपी मैल, ज्ञानरूपी पाणी, तप संयम रूपी साजी साबू, उससे धोय के मैल को निकाले जिसको निर्जरा तत्व कहिये।

निर्जरा तत्वके बारह भेद—अणसणमुणोयरिया वित्ती सखेण रसच्चाओ। काय किलेसो संलीणयाय बज्झो तवो होइ ॥ १ ॥

पायच्छित्त विणओ वेयाच्चं तहेव सज्झाओ । झाणं विउसग्गो वि य अब्भितरओ तवो होई ॥२॥ ६ प्रकार बाह्य तप—अणसण १, ऊणोदरी २, भिख्याचरी ३, रसपरित्याग ४, कायाक्लेश ५, पडिसलेहण ६ । छ प्रकार अभ्यतर तप—प्रायश्चित ७, विनय ८, वैयावच्च ९, सज्झाय १०, ध्यान ११, वीउसग्ग १२

हिवे ६ प्रकार बाह्य तप लिखते हैं—

अणसण के दोय भेद—इतरीया १ अने आउकाल २ । इतरीया कहिये थोड़े कालको और आउ कहिये जावज्जीवको । इतरीया के छव भेद श्रेणतप १, प्रतलतप २, घणतप ३, वर्गतप ४, वर्गावर्ग तप ५, अकीर्ण तप ६ ॥

श्रेणतपके चवदे भेद—व्रत करे १, वेला करे २, तेला करे ३, चोला करे ४, पांच करे, ५, छव करे ६, सात करे ७, अधमास करे ८, मास करे ९, दो मास करे, १०, तीन मास करे ११, च्यार मास करे १२, पांच मास करे १३, छवमास करे १४ ॥

जघन्य तो नवकारसी करे, उत्कृष्टा छवमासका तप करे जिसको बाईस मास सताईस दिन लगे उसको श्रेणतप कहिये ।

प्रतल तपके सोलह भेद—व्रत करे, वेला करे, तेला करे, चौला करे । वेला करे, तेला करे, चौला करे, व्रत

करे। तेलाकरे, चौला करे, व्रत करे, बेला करे, चौला करे, व्रत करे, बेला करे, तेला करे, जिसको छपनदिन लगे।

॥ सोलह कोठा भरे ॥

१	२	३	४
२	३	४	१
३	४	१	२
४	१	२	३

घनतप-घणतप किसको कहिये? सोलहव्रत करे, सोलह बेला करे सोलह तेला करे, सोलह चौला करे, चौसठ कोठा भरे इसको घणतप कहिये॥

वर्गतप-किसको कहिये? चौसठको चौसठका गुणा करे, च्यार हजार छिन्नवें कोठा भरे जिसको वर्गतप कहिये। वर्गावर्गतप किसको कहिये? च्यार हजार छिनवेंको च्यार हजार छिन्नवेंसे गुणा करे, १६७७७२१६ कोठा भरे इसको वर्गावर्ग तपकहिये।

अकीर्णतपके दश भेद—नवकारसी करे १ पौरसी करे २, दो पौरसी करे ३, एकासणा करे ४, एकलठाण करे ५, निवी करे ६, आयंबिल करे ७, उपवासकरे ८, अभिग्रह करे ९, चरम पच्चक्खाण करे १० ॥

आउकालके तीन भेद—पादोपगमण १, भत्तपच्चक्खाण २, इंगतमरण ३।

पादोपगमरणके पांच भेद—शहरके अन्दर करे १, शहरके बहार करे २, कारण पडीयां करे ३, विना कारण पडीयां करे ४, नियमा पराक्रम रहित करे, जिम वृक्षकी डाळ टूटके पड़े ऐसे पडे ५ ।

भत्त पच्चक्खाणके छव भेद—शहर के अन्दर करे १, शहरके बहार करे २, कारण पडीयां करे ३, विना कारण पडीयां करे ४, नियमा पराक्रम रहित करे ५, सहित करे उठे बैठे हाले चाले ६ ॥

इंगित मरणके सात भेद—शहरके अन्दर करे १, शहरके बहार करे २, कारण पडीयां करे ३, विना कारण पडीया करे ४, नीमा पराक्रम रहित करे ५, सहित करे उठे बैठे हाले चाले ६, धरतीकी मर्यादा करे ७ ॥ ॥ इति अनसण ॥

उणोदरीके दोय भेद—द्रव्य उणोदरी १, भाव उणोदरी २, ।

द्रव्य उणोदरी के दोय भेद—भंड उपगरण उणोदरी १, भत्तपाणी उणोदरी २ ।

भंड उपगरण उणोदरीके च्यार भेद—एकेवस्थे (वस्त्र) १ पाये (पात्रा) २, प्रतीतकारी रखे ३, थोड़े मोलका इत्यादिक दोष रहित रखे ४ ।

भत्तपाणी उणोदरीके अनेक भेद—एक कवलका आहार करे इकतीस (३१) कवल का त्याग करे इसको उत्कृष्टी उणोदरी कहिये, आठ कवलका आहार करे चौवीस कवलका त्याग करे वह अल्प आहार पूणी उणोदरी, बारे कवल की आहार करे वह डेढ भागका आहार अढ़ाई भाग की उणोदरी, १६ कवलका आहार करे ते अर्द्ध उणोदरी, २४ कवल का आहार करे ते पाव उणोदरी, ३१ कवल का आहार करे ते किंचित् उणोदरी कहिये, ३२ कवल का आहार करे ते उणोदरी तप नहीं मर्यादा सहित पुरुषका बत्तीस कवल का सम्पूर्ण आहार, स्त्री का २८ कवलका सम्पूर्ण आहार, नपुंसक का २४ कवलका सम्पूर्ण आहार ।

भाव उणोदरीके दश भेद—अप्प कोहे १, अप्पमाणे २, अप्पमाए ३, अप्पलोभे ४, अप्परागे ५, अप्पद्वेषे ६, अप्पकलहे ७, अप्पसद्दे (बकवाद करे नहीं) ८, अप्पझंझे ९, अप्पतुम तुमे (मौन राखे) १०, ॥ इति उणोदरी ॥।

भिख्याचारी के ३० भेद—द्रव्याभिगचरिए १, क्षेताभिगचरिए २, कालाभिगचरिए ३, भावाभिगचरिए ४, उक्खित्तचरिए ५, निक्खित्तचरिए ६, उक्खित्त निक्खित्तचरिए ७, निक्खित्त उक्खित्तचरिए ८, वट्टिज्जमाणचरिए ९, साहारिज्जमाण चरिए १०, विणोए चरिए ११, अविणीए चरिए, १२, अविणीए उविणीए चरिए १३, उविणीए अविणीए चरिए १४,

१७, अन्नाव चरिए—१८, मोन चरिए १९, दिट्ठ लाभे २० अदिट्ठलाभे २१, पुट्ठलाभे २२, अपुट्ठलाभे २३, भिक्खलाभे २४, अभिक्खलाभे २५, अण्णगिलायए २६, उवीणीए २७ परिमित पिंडवाए २८, सुद्धेसणिए २९, सखायत्तिए ३०।

खेत्र भिख्या चरी के ८ भेद—पेडी के आकार १, अर्द्ध पेड़ी के आकार २, गोमूत्रके आकार ३, पतंगिया के आकार ४, सखके आकार ५, सिंघाड़ाके आकार ६, आंता ७, आता ८।

काल भिख्या चरीके ४ भेद—पहिले पोहर (प्रहर) में गोचरी करके आहार पाणी लावे, पहिले पोहर में चुकावे, तीन पोहर का त्याग करे १, पहिले पोहर का त्याग करे, दुजे पोहर में लावे दुजे पोहर में चुकावे, तीजे चौथे पोहरका त्याग करे २, पहिले दुजे पोहर का त्याग करे, तीजे पोहर में लावे, तीजे पोहर में चुकावे, चौथे पोहर का त्याग करे ३, पहिले दुजे तीजे पोहर का त्याग करे, चौथे पोहर में लावे, चौथे पोहर में चुकावे ४।

भाव भिख्याचरीके १५ भेद—तीन वयकी स्त्री बाल १, युवा २, वृद्ध ३, तीन वय का पुरुष बाल ४ युवा ५ वृद्ध ६, अमूकावर्ण ७, अमूका संठाण ८, अमूका वस्त्र ९, बैठा हो १०, खडा हो ११, शिर खुला हो १२, शिर ढका हो १३, आभरण सहित हो १४, आभरण रहित हो १५। इति भिख्याचरी॥

रसपरित्यागके बारह भेद—प्रतनीक रसके त्याग करे १, आयंबिल करे २, निवी करे ३, अरस आहारी ४, विरस आहारी ५, लुह (लुख) आहारी ६, तुच्छ आहारी ७, अत जीवी ८, पत जीवी ९, लुह जीवी १०, तुच्छ जीवी ११, अयासमथ भेयणं १२, ॥ इति रसपरित्याग ॥

काया क्लेश के १६ भेद—खड़ा होके काउस्सग करे १, निसी आसण २, पद्मासण ३, कुकड़ आसण ४, हंस आसण ५, लकड़ आसण ६, गोदुह आसण ७, वीरआसण ८, धनुष आसण ९, खाज खणे नहीं १०, थूक थूके नहीं ११, शरीर को मेल उतारे नहीं १२, शरीर की शुश्रूषा करे नहीं १३, शीत को वेदना सहे १४, उष्णकी वेदना सहे १५, लोचादिकवा परिसह (कष्ट) सहे १६ ॥ इति काया क्लेश ॥

पड़िसंलेहणा के च्यार भेद—इन्द्रिय पडिसंलेहणा १, कषाय पडिसंलेहणा २, जोग पडिसंलेहणा ३, विवत सयणासेण पड़ि संलेहणा ४।

इन्द्रिय पड़िसंलेहणा के ५ भेद—श्रुतइन्द्रिय १, चक्षुइन्द्रिय २, घ्राणइन्द्रिय ३, रसइन्द्रिय ४, स्पर्शेन्द्रिय ५, पांच इन्द्रियकी २३ विषय इनकूं उदीरे नहीं, उदय आयां राग द्वेष करे नहीं, इस कु इन्द्रिय पडिसलेहणा कहीये १

कषाय पड़िसंलेणा के च्यार भेद—क्रोध १, मान

२, माया ३, लोभ ४, इनकूं उदीरे नहीं उदय आया निष्फल करे इसकू कषाय पड़िसंलेहणा कहिये २ ।

—जोगपड़िसंलेहणा के तीन भेद—मन, वचन, काया का जोग, आश्रव सुं रोके, संवर में वर्तावे इसकूं जोग पड़िसंलेहणा कहीये ३ । विवत सयणासेण पड़िसंलेहणा किसे कहीये ? उज्जाणे सुवा, आरामे सुवा, देवकुले सुवा, संभासुवा पवासुवा, पाणिए गिहेसुवा, पाणिए साला सुवा इत्यादिक स्थानक स्त्री, पशु, पंडक रहित भोगवे तिनकूं विवतसयणासण पड़िसंलेहणा कहीये ४ ॥ इति पड़िसंलेहणा ॥

—अथ छप्रकार अभ्यंतर तप—

प्रायश्चित ५० भेद—दश बोलकरी दोष लगावे "कंदर्पेकरी १, प्रमादे करी २, अजाणेकरी ३, अकस्माते करी ४, आपदा पड़ीयां ५, संकट पड़ीया ६, क्षुधा तृषासं पीड़ायां थका ७, राग द्वेष करी ८, भय करी ९, पारख्या निमित्ते १०"

दशबोल करी आलोवतो दोष लगावे—

कांपता कांपता आलोवेतो १, अनुमान प्रमाण बांधके आलोवेतो २, देख्या दोष आलोवे अणदेख्या नहीं आलोवेतो ३, सूक्ष्म सूक्ष्म आलोवेतो ४, बादर बादर आलोवेतो ५, गण गणाट करता आलोवेतो ६, लोग सुणता आलोवेतो ७, घणा

मनुष्यमें आलोवेतो ८, प्रायश्चितके अज्ञाणपास आलोवेतो ९, प्रायश्चितीये पास आलोवेतो १० ॥

दश बोल करी सहित होय ते आलोवे—

जातिवंत १, कुलवंत २, विनयवंत ३, ज्ञानवंत ४, दर्शनवंत ५, चारित्रवंत ६, क्षमावंत ७, वैरागवंत ८, अमाई ९, अपच्छाणुतावे" १० ॥

जिसमें १० गुण होय उसपे आलोवे-

आचारवंत १, अधारवंत २, विहारवंत ३, प्राय श्चितना जाणहो ४, लज्जा मूकावीने आलोयना करावे ५, शुद्ध करवा समर्थ हो ६, आलोया दोष प्रकाशे नहीं ७, लंडो लंड करी प्रायश्चित देवे ८, अवाए दसी पिय धम्मे ९, द्दढ धम्मे १०" ॥

दश प्रकारका प्रायश्चित—आलोयणा १, पडिक्कमणा, २, तदुभया ३, विवेगे ४, विउसग्गे ५, तवे ६, छेदे ७, मूले ८, अणुट्ठपा ९, पारंचिए १० ॥ इति प्रायश्चित ॥

विनय के ७ भेद—नाण विनय १, दसण विनय २, चारित्र विनय ३, मन विनय ४, वचन विनय ५, काय विनय ६, लोगोवयार विनय ७ ।

नाण विनय के पांच भेद—मति १, श्रुति २, अवधि ३, मनपर्यव ४, केवल नाण विनय ५,

दंसण विनयके दोय भेद—शुश्रूषा विनय १, अणचा सायण विनय २।

सुसुणा विनय के १० भेद—गुरु आवे तो उठ खड़ा होवे १, आसण आमन्त्रे २, आसन बिछायदे ३, सत्कार देवे ४, सन्मान देवे ५, वंदना नमस्कार करे ६, हाथ जोड़ीने खड़ा रहे ७, आवताकू लेण जाय ८, रहिताकी सेवा करे ९, जाता कू पोहचावण जाय १०।

अणचा सायणा विनय के ४५ भेद—अरिहंताका विनय करे १, अरिहंत परूपीया धर्मका २, आचार्य का ३, उपाध्याय का ४, थेवरा का ५, कुलका ६, गणका ७, संघका ८, साधर्मीका ९, क्रिया पात्रका १०, मति ज्ञानका ११, श्रुत ज्ञानका १२, अवधिज्ञान का १३, मनपर्यव ज्ञानका १४, केवलज्ञानका १५, ए पन्नरेकी आसातना टाले, ए पन्नरें का विनय करे, पन्नरे को बहुमान दे, गुण ग्राम करे ए ४५।

चारित्र विनय के ५ भेद—सामायिक चारित्रका विनय १, छेदोप स्थापनाय चारित्रका२, परिहार विशुद्ध चारित्रका ३, सूक्ष्म सपराय चारित्रका ४, यथाख्यात चारित्रका ५।

पहिला सामायिक चारित्रका २ भेद—इतरीया अने आउ, इतरीया कहता थोडे कालकी, आउ कहतां आवजीवकी।

इतरीयाके तीन भेद—जघन्य तो सात दिनको, मध्यम च्यार महीनेको, उत्कृष्टो ६ मासको। जावज्जीव सामायिक चारित्रकी स्थिति—जघन्य १ समयकी उत्कृष्टी देश उणो पूर्व कोड़ की १।

छेदोप स्थापनीय चारित्रके २ भेद—समतिचार, निरतीचार। सअतिचार दोष सहित, निरतीचार दोष रहित।

छेदोप स्थापनीयकी स्थिति—जघन्य १ समयकी उत्कृष्टी देशउणी कोड़ पूर्वकी।

परिहार विशुद्ध चारित्रके २ भेद—अनुट्ठकाय १, अनुट्ठपाय २। अनुट्ठ कहतां, एक गुरु आठ शिष्य ए नव जणे गच्छ माहि थी निकले। अनुट्ठपाय कहता तपस्या करवाने विषे सावधान हुवा ६ मास ताई ४ जणा तपस्या करे, ४ जणा वैयावच्च करे, एक गुरुदेव वखाण देवे। दूसरा छव मास जिन्होंने तपस्या करी सो तो वैयावच्च करे जिन्होंने वैयावच्च करी सो तप करे जौनसा गुरु है सो वखाण करे, फिर तीसरे छ मास गुरु तो तप करे। आठों शिष्य वैयावच्च करे, अठारो महीना का तप कह्या छे।

पाठान्तरे—नव नव वर्षका नव जणा दीक्षा लेकर निकले २० वर्ष तक दीक्षा पर्याय पाले, २० वर्षका समुदाय

छांडाने नीकले।-प्रथम छम्मासी में-चार जणा तपस्या करे चार जणा वेयावच्च करे एक जण वखाण-वांचे दूजी छमासीमें तपस्या-करता था सो वैयावच्च करे और वेयावच्च करता था सो तप करे तीसरी छ मासीमें वखाण देने वाला तपस्या करे सात जणा वेयावच्च करे एक जणा वखाण वाचे। पारणे रे दिन आंबिल करे। उनालेमें जघन्य उपवास करे मध्यम वेलो करे, उत्कृष्टो तेलो करे, शियालेमें जघन्य वेलो करे, मध्यम तेलो करे, उत्कृष्ट चोलो करे। चौमासामें जघन्य तेलो करे, मध्यम चोलो करे उत्कृष्ट पचोलो करे।

परिहार विशुद्ध चारित्रकी स्थिति—जघन्य १ समयकी उत्कृष्टी उणतीस वर्ष उणी क्रोड़ पूर्व की।

सूक्ष्म संपराय के दो भेद—संक्लेश माणे १, विशुद्ध माणे २। संक्लेश माणे कहता कषाय के भाव सहित, विशुद्ध माणे कहता कषायके भाव रहित।

सूक्ष्म संपरायकी स्थिति—जघन्य १ समयकी उत्कृष्टी अंतर मुहूर्त्तकी, संक्लेश उपसम श्रेणीका धणी; विशुद्ध माणे क्षपक श्रेणीका धणी।

यथाख्यात चारित्र के दोय भेद—छद्मस्थ १, केवली २। छद्मस्थ के दोय भेद उपशांत कषाय वीतराग और क्षीण कषाय वीतराग इग्यार में गुणस्थान की स्थिति जघन्य १

समय की, उत्कृष्टी अन्तर मुहूर्त्त की। बारमें गुणस्थानकी स्थिति जघन्य उत्कृष्टी अन्तर मुहूर्त्त की। केवली तेरह में चवद में गुणठाणेमें, तेरमें गुणठाणे की स्थिति जघन्य अन्तर मुहूर्त्त की उत्कृष्टी देश उणी क्रोड पूर्वकी, चवद में गुणठाणे की स्थिति पाँच लघु अक्षरकी, ये पांच चारित्रका विनय करे।

मन विनय के दोय भेद—अपसत्थ मन विनय १, पसत्थ मन विनय २।

अपसत्थ मन विनय के १२ भेद—जे मणे सावज्जे १, सकिरीए २, सकक्कसे ३, कडुए ४, निठ्ठुरे ५, फरुसे ६, अण्हय करे ७, छेद करे ८, भेद करे ९, परितावण करे १०, उद्दवेग करे, ११, भुओ वघाईए १२। तहप्पगारं मणे न पहारेजा। १२ भेद अपसत्थ मन, विनयके हुवे

पसत्थ मन विनय के १२ भेद—तं चेव पसत्थेणं णेयव्व ॥ २४ ॥ एवचेव वइ विणओवि एएहिं पएहिं चेव णेयव्वो ॥ ३४ ॥ इति वचन विनय ॥

काय विनय के २ भेद—अपसत्थ काय विणए १, पसत्थ काय विणए २।

अपसत्थ काय विनय के ७ भेद—अणाउत्त गमणे १, अणाउत्त ठाणे २ अणाउत्त निसीयणे ३, अणाउत्त तुयट्टणे ४, अणाउत्त उल्लंघणे ५, अणाउत्त पल्लंघणे ६,

अणाउत्त संव्विदिए काय जोग जुंजणया ७ । सेतं अपसत्थ काय-विणए ।- सेकिंत पसत्थकाय विणए एव चेव पसत्थ भाणियव्व सेत पसत्थ काय विणए ॥ इति काय विणय ॥

लोगोवयार विनयके ७ भेद—अब्भास वत्तिय १, परछंदाणु वत्तियं २, कज्जहेउं ३, काय पडि किरिया ४, अत्त-गवेसणया ५, देसकालण्णुया ६, सव्वट्ठेसु अप्पडोलोमया ७ ॥ ॥ इति लोगोवयार विनय ॥

वैयावच्च तप के १० भेद—आयरिय वेयावच्चे १, उवज्झाय वेयावच्चे २, नवदीक्खित वैयावच्चे ३, गिलाण वैयावच्चे ४, तवस्सि वेयावच्चे ५, थेरे वैयावच्चे ६, साहम्मि वैयावच्चे ७, कुले वेयावच्चे ८, गणे वैयावच्चे ९, संघवेयावच्चे १० । इति वैयावच्च ॥

सज्झाय तप के ५ भेद—वायणा १, पुछणा २, परिट्टणा ३, अणुप्पेहा ४, धम्म कहा ५ ॥ इतिसज्झाय ॥

ध्यान तप के ४ भेद—आर्तध्यान १, रौद्रध्यान २, धर्मध्यान ३, शुक्लध्यान ४ ॥

आर्तध्यान के ४ भेद ४ पाए—अमनोगमका शब्द, रूप, गंध, रस, स्पर्श उदय आया होय जिसका वियोग वछे १ । मनोगमका शब्द रूप, गंध, रस, स्पर्श उदय आया होय जिसका संजोग वछे २ । आतंग रोग आया होय जिसका

विजोग चछे ३ । अपर भूसिय काम भोगका अविजोग चछे ४ ॥

आर्तध्यान के ४ लच्चण—कदणीया १, सोयणीया २, तिप्पणीया ३, पिलवणीया ४, ए आर्तध्यान के लक्षण हुवे ॥

रौद्रध्यान के ४ पाए—हिंसाणु वधी १, मोसाणु वंधी २, तेणाणु वधो ३, सारक्खणाणु वधो ४ .

रौद्रध्यान के ४ लच्चण—उसण्ण दोसे १, बहुल दोसे २, अण्णाण दोसे ३, मरणंत दोसे ४ ।

धम्मेज्झाणे चउव्विहे चउपडयारे पएणत्ते. तंजहा—अणा विजए १, अवाय विजए २, विवाग विजए ३, संठाण विजए ४ । धम्मस्सणं झाणस्सणं चत्तारी लक्खणा पएणत्ता तंजहा—आणारुई १, निसग्गरुई २, सुत्तरुई ३, उवएस रुई ४, । धम्मस्सणं झाणस्सणं चत्तारि आलंवणा पएणत्ता तंजहा—वायणा १, पुच्छणा २, परियट्टणा ३, धम्मकहा ४, । धम्मस्सणं झाण स्सणं चत्तारी अणुप्पेहा पएणत्ता तंजहा—अणिच्चाणुप्पेहा १, असरणाणुप्पेहा २, संसाराणु

प्पेहा ३, एगंताणुप्पेहा ४, ए सूत्र कह्यो ॥

हिवे अर्थ कहे छे-धर्म ध्यान के ४ भेद—अणा विजए १, अवाय विजए २, विवाग विजए ३, संठाण विजए ४।

धर्मध्यान नो पहिलो भेद—आणा विजए कहतां वीतरागनी आज्ञा जे सम्यक सहित, १२ व्रत सहित, ११ पडिमा श्रावक नी, पांच महाव्रत साधुना, भिखुनी १२ पडिमा। शुभ-ध्यान, शुभ जोग, ज्ञान दर्शन चारित्र, तप, छकायनी रक्षा करे, ए वीतरागनी आज्ञा आराधवो। तिहां समय मात्रनो प्रमाद न करवो, चतुर्विध तीर्थना गुण कीर्तन करवा ए धर्मध्यान नो पहिलो भेद छै।

हिवे धर्मध्यान नो बीजो भेद—अवाएविजए कहता संसार माहिं जीव जेह थी दुख पामेछै तेहनो विचार चिन्तवनो। मिथ्यात १, अव्रत २, कषाय ३, प्रमाद ४, अशुभ जोग ५, तथा अठारे पाप स्थानक, छ कायनी हिंसा, सात कुव्यसन, ए दुखनो कारण एहवो आश्रव जाणी छांडीने संवर मारग आदरवो, तेहथी जीव दुख न पामे, ए धर्मध्यान नो बीजो भेद।

हिवे धर्म ध्याननो तीजो भेद कहे छे—विवाग विजए कहता जीव सुख दुख भोगवे ते स्या कारण सुं ?

तेहनो विचार चिन्तवचो, तेहनो एह विचार—जीव जे वारता करे पूर्वे जेहवा शुभा शुभ ज्ञानावरणीय कर्म उपारज्याछे ते शुभाशुभ ना कर्मना उदय थी जीव जेहवा सुख दुःख अनुभवे, ते अनुभवता थकां कोई ऊपर राग द्वेष न आणे, समता भाव आणे, मन वचन कायाना शुभ जोग सहित जिनधर्मने विषे प्रवर्त्ते, जिम निराबाध परम सुख पामे॥ ए धर्म ध्याननो तीजो भेद॥

हिवे धर्म ध्याननो चोथो भेद कहे छे—

संठाण विजय कहतां तीन लोकना आकार नो स्वरूप चिन्तवचो, तेहनो एह स्वरूप-लोक सुपइठने आकार छै, जीव अजीव संपूर्ण भरयो छै, तथा असंख्याता वाण-व्यंतरां ना नगर छै, तथा असंख्याता ज्योतिषीना विमाण छै, असंख्याती राजधानी छै, तिहां अढाई द्वीप माहिं तीर्थंकर जघन्य २०, उत्कृष्टा १६० तथा १७०, केवली जघन्य २ कोड़ि, उत्कृष्टा ९ कोड़ि, साधु जघन्य २ हजार कोड़ि, उत्कृष्टा ९ हजार कोड़ि, साधु होय तेहने वंदामि। तथा तीर्छालोक मांहीं असंख्याता श्रावक श्राविका तिर्यंच छै, तेहना गुण ग्राम करुं छुं, ते तीर्छालोक थकी असंख्यात गुणा अधिक ऊर्ध्वलोक छै, तिहा १२ देवलोक, ९ नवग्रैवेयक, ५ अनुत्तर विमाण, थई ने ८४ लाख ९७ हजार २३ विमान छै। ते ऊपर सिद्धशिला छै। ते सिद्धशिला केहवी छै? ८ जोजन बीचमें मोटी छै,

ढलतो ढलती छेहड़े माखी की पाख समान पातली रही छे, उंधा छत्रके आकार छे, ४५ लाख जोजनरी लाम्बी चौड़ी छे, १ क्रोड़, ४२ लाख ३० हजार २ सो उणचास जोजन १ गाउ १७६६ धनुष पूणीछव आंगल जाझेरी परधी छै, तेहनो वर्ण केहवो छ, ? जेहवो सख, क्षीर समुद्रनो पाणी, मचकदना फूल, अमृत मथा हुवा, च्यार कोसमांहीं थी एक कोस लोजिए, एक कोसके छव भाग कीजे, तेहना छट्ठा भाग माहीं अनता सिद्ध भगवान विराजे छै, तेहने वदामि।

ते ऊर्ध्वलोक थी कांइक विशेष अधिको अधोलोक छे, तिहां ८४ लाख नर्कका वासा छे, ७ कोडि ७२ लाख भवन पतिना भवन छै, एहवा तीन लोकना सर्व स्थानक सम्यक् करणी विना सर्व जाव अनत अनतीवार जनम मरण करी स्पर्शी, मूक्या इम जाणी सम्यक् सहित सूत्र चारित्रनी आराधना करे जिम अजर अमर पद पामें। ए धर्म ध्याननो चोथो भेद छे॥

हिवे धर्मध्यान ना ४ लक्षण कहे छै—

पहिलो लक्षण आणारुई कहता वीतरागनी आज्ञा अणोल्हार करवानी रुचि उपजे। एह धर्मध्यान नो पहिलो लक्षण॥

हिवे धर्मध्यान नो वीजो लक्षण कहे छै—

निसग्ग रुइ कहता जीवने सुभावेज तथा जातिस्मरणादिक ज्ञाने करी सूत्र चारित्र धर्म करवारुचि उपजे, एह धर्मध्यान नो वीजो लक्षण।

हिवे धर्मध्यान नो तीजो लक्षण कहे छे—

सुत्तरुइ कहतां सूत्रना २ भेद-अंग पइट्ठे १, अणंगपइट्ठे २। अंगबाहिरे, अंगपविट्ठे। आचारंगादिक १२ अंग ते माहीं ११ अंग ते कालिक, अने बारमो अंग ते उत्कालिक।

अंग बाहिरना बे भेद—आवस्सग १, आवस्सग थी बाहिर २, आवस्सग ते सामायिकादिक ६ अध्ययन ते उत्कालिक अने आवस्सगथकी बाहिर ते उत्तराध्ययनादिक कालिक सूत्र तथा दश वैकालिक, उववाइ प्रमुख उत्कालिक, इत्या सूत्र सांभलवानो तथा भणावानो रुचि उपजे, ते सूत्र रुचि कहीये॥ ए धर्म ध्यान नो तीजो लक्षण॥

हिवे धर्म ध्यान को चोथो लक्षण कहे छै—

उपदेश रुइ कहता अज्ञान करी उपार्ज्या कर्म ते ज्ञान करी खपावी ज्ञान करी नवा न बांधे. आश्रव करी उपार्ज्या कर्म ते व्रत करी खपावे, प्रमाद करी उपार्ज्या कर्म ते अप्रमाद करी खपावे, अप्रमाद अनकरवे करी कर्म न बांधे, कषाय करी उपार्ज्या, कर्मते अकषाय करी खपावे. कषाय अनकरवे करी नवा न बांधे, जोग करी उपार्ज्या कर्म ते अजोग करी खपावे, अजोग करी नवा न बांधे, पांच इन्द्रियना शब्द रूपादिक आश्रव करी उपार्ज्या कर्म ते तप संवर करी खपावे ते तप संवर करी नवा न बांधे, ते माटे अज्ञानादिक आश्रव छांडी ज्ञानादिक संवर आदरे, एहवो तीर्थंकरनो उपदेश सांभलवानी रुचि सहित

अङ्गीकार करवानी रुचि उपजे तेहने उपदेश रुचि कहीये, तथा उपदेश रुचि कहीये ॥ ए धर्मध्यान नो चौथो लक्षण कह्यो ॥

हिवे धर्मध्यानना ४ आलंबण कहे छै—

वायणा १, पुछणा २, परियट्टणा ३, धम्मकहा ४। धर्मध्यान नो पहिलो आलंबण वायणा ते केहने कहीये ? विनय सहित ज्ञान तथा निर्ज़राने हेते सूत्र अथवा जाण गुरुआदिक समीपे तथा अर्थनी याचणी लीजे तेहने वायणा कहीये ॥ ए धर्म ध्याननो पहिलो आलंबन ॥ १ ॥

हिवे धर्म ध्यान नो बीजो आलम्बन—

पुछणा, ते केहने कहीये ? अपूर्व ज्ञान पावाने अर्थे यथायोग्य विनय सहित गुरुआदिक ने प्रश्न पूछीजे तेहने पुछणा कहीये ॥ ए धर्म ध्यान नो बीजो आलंबन २ ॥

हिवे धर्म ध्याननो तीजो आलम्बन—

परियट्टणा, ते केहने कहीये ? पूर्वे जे जिन भाषित सूत्र अर्थ भण्या छे ते अस्खलित करवाने अर्थे तथा निर्जरा के हेतु (कारण) शुद्ध उपयोग सहित सूत्र अर्थनी बराबर चिन्तवणा करे तेहने परियट्टणा कहीये ॥ ए धर्म ध्यान नो तीजो आलंबन ३ ॥

हिवे धर्म ध्याननो चौथो आलम्बन—

धर्म कथा, ते केहने कहीये ? वीतरागे जे भाव जेहवा परूप्या छै, ते भाव तेहवा पोते लहीने, गहन विषय निश्चय करीने, शंका

कथा वितिगिच्छा रहित पणे पोतानी धर्म निर्जराने अर्थे, पर उपगारने अर्थे सभा मध्ये, तेहवा भाव परूपे, तेहने धर्म कथा कहीये । एहवी धर्म कथा कहता थकां अने सांभलीने सरदहता थका ते सहु वीतरागनी आज्ञा आराधक होय, लोग बीजार्णती इह केवलीण गाथा ते ए धर्म थकी संवर रूपीयो वृक्ष सेवोए । जिम मन वच्छित सुख पामें ।

संवर रुपीयो वृक्ष वखाणीये छे—ते संवर रूपीयो वृक्ष केहवो छे ? विशुद्ध सम्यक्त रूपीयो मूल छे १ जेहने धीरज रूपी खंध छे २, जेहने वेदिका विनय रूपीछे ३, तीर्थंकर ना तथा ४ तीर्थना गुण कीर्त्त रूपो कन्द छे जेहनो ४, पंचमहा व्रत रूपी मोटी साखा छे जेहनी ५, पचीस भावना रूपी त्वचा छे जेहनी ६, ध्यान सुभ जोग ज्ञान रूप प्रधान पल्लव पत्र छे जेहना ७, सतावीस गुण रूपीया फूल छे जेहना ८, शीलरूपी वासना छे जेहनी ६, आश्रव रहित फल छे जेहना १०, मोक्ष रूपीयो प्रधान वीज छे ११, जिम मेरु गिरीनी शिखर ऊपर चूलिका विराजे तिम सम्यक् दृष्टीना हृदय कमलने विषे संवर रूपीयो वृक्ष विराजे । एहवा संवर रूपीया वृक्षनी शीतल छाया जेहने परीणमें तेहना भव भवना संताप टले, अनन्त परम सुख पामे इत्यादिक ।

४ प्रकारनो कथा—अखेवणी १, विखेवणी २, संवेगणी ३, निर्वेगणी ४ । कथा विस्तारपणे कहीये ॥ एह धर्मध्यान नो चोथो आलंबन ४ ॥

हिवे धर्मध्याननी ४ अणुप्पेहा कहे छे-

एगत्ताणुप्पेहा केहने कहीये ? जीव द्रव्य अने अजीव द्रव्य तेहनो स्वभाव रूप जाणवा अर्थ सूत्रनो अर्थ विस्तार चिन्तवे तेहने एगत्ताणुप्पेहा कहीये ॥ ए धर्म ध्याननी पहिली अनुप्पेहा १ ॥

हिवे धर्मध्यानी बीजो अणुप्पेहा—

अनित्याणुप्पेहा ते केहने कहीये ? जीव असंख्यात प्रदेशी अरूपी सदा उपियोगी एहवी म्हारी एक आत्मा छे, जेह भणी वारंवार अर्थ रूप अने पोगसा १ मीससा २ वीससा ३ पुद्गल ते वर्ण पर्जव छे एह स्वभाव छे तेहवो स्वभाव रहे नहीं, एह धर्म-ध्यान नी बीजी अणुप्पेहा २ ॥

हिवे धर्मध्याननी तीजी अणुप्पेहा—

असरणाणुप्पेहा, ते केहने कहीये ? अभावने विषे अनु पर भाव ने विषे अण पहुचतां जीवने एक सम्यक् श्रुत पूर्व जिन धर्म विना जनम जरा मरणने दुख निवारवा देवादिक समर्थ नथी, इम जाणीने जिन धर्मना सरणा महे जिम परम सुख उपजे । ए तीजी अनुप्पेहा ३ ॥

हिवे चोथी अणुप्पेहा—ते केहने कहीये ? स्वार्थ रूपी ससार समुद्र माहीं जनम जरा मरण विजोग सजोग शरीरी माणसी दुख कषाय मिथ्यात तृष्णादिक बहुल जल कलोलनी लहर करी, च्यारगति चोवीस दण्डकने विषे परिभ्र-

मण करता जगत जीवना -जिन धर्म रूपी द्वीपानो आधार छे, तथा सजम रूपी नावा ते तिहां समृयक रूपी निजाम नावा नो खेवण हार (खेवणहार) छे एहवी नावा करी जीव सिद्ध रूपो नगरने विषे पहुंचे, तिहां अनन्त अडोल विमल सिद्धना सुख पामे। एह धर्म ध्याननी चोथी अनुप्पेहा। ए धर्मध्यान ना गुण जाणी सदा धर्मध्यान ध्याइए॥ इति धर्मध्यान का ४ लक्षणः॥

शुक्ल ध्यान के लक्षण—सुक्के ज्झाणे चउव्विहे चउप्पडोयारे पण्णत्ते, तंजहा–पुहुत्तवियक्के सवियारी १, एगत्त-वियक्के अवियारी २, सुहुम किरिए अप्पडिवाई ३, समुच्छिन्न कि-रिए अणियट्टी ४।

शुक्ल ध्यान के च्यार लक्षण—विवेगे १, विउ-सग्गे २, अव्वहे ३, असमोहे ४।

शुक्ल ध्यान के ४ आलम्बन—खंती १, मुत्ती २, अज्जवे ३, मद्दवे ४।

शुक्ल ध्यान की ४ अणुप्पेहा—अवायाणुप्पेहा १, असुभाणुप्पेहा २, अनन्तव्विच्चियाणुप्पेहा ३, विप्परिमाणुप्पेहा ४॥ इतिध्यान॥

विउसग्गतप के २ भेद—द्रव्यविउसग्ग १, भाव-विउसग्ग २।

द्रव्य विउसग्ग के ४ भेद—शरीरविउसग्ग १, गणविउसग्ग २, उवहीविउसग्ग ३, भत्तपाणविउसग्ग ४।

भावविउसग्ग के ३ भेद—कषायविउसग्ग १, संसारविउसग्ग २, कर्मविउसग्ग ३।

कषायविउसग्ग के ४ भेद—कोहे १, माणे २, माया ३, लोभे ४।

संसारविउसग्ग के ४ भेद—नेरीए १, तिरिए २, मणुए ३, देवे ४।

कर्मविउसग्ग के ८ भेद—ज्ञानावरणीय १, दर्शनावरणीय २, वेदनीय ३, मोहनीय ४, आयुष्य ५, नामा ६, गोत्र ७, अंतरायकर्म विउसग्ग ८॥ इतिविउसग्ग॥

॥ इति निर्जरा तत्व समाप्तम्॥

बंधतत्व।

बंध किसको कहते हैं? अनेक चीजोंमें एकपने का ज्ञान करनेवाले तथा आत्माके प्रदेश और कर्मके पुद्गल एकसाथ मिले, खीर नीरके माफिक व लोह पिण्ड अग्निके माफिक लोलिभूत होकर बंधे।

जीव आठ कर्मसे बंध्यो हुवो है, जीव और कर्म लोलिभूत है, जैसे दुध और पानी लोलिभूत है, हँसराज पक्षीकी चोंच (चांच) खाटी है, दुधमें घाल्यां दुध न्यारो करदे पाणी न्यारो कर दे, उस माफिक जीव रूप हँसराज ज्ञान रूपी चोंच करीने जीव जुदो करदे कर्म जुदा करदे।

बंधका तत्व च्यार भेद।

पयई सहावो वुत्तो, ठिइ कालावहारणं।
अणुभागो रसोणेओ, पएसो दलसंचओ ॥ १ ॥

१ प्रकृतिबंध—आठ कर्मका स्वभाव।

२ स्थितिबंध—आठ कर्मकी स्थितिके काल का मान (प्रमाण)।

३ अनुभागबंध—आठ कर्मको तीव्र मंदादि रस।

४ प्रदेशबंध—कर्म पुद्गल के दल आत्मा के साथ बंधे वो।

इन च्यार बंधका स्वरूप मोदकके दृष्टान्त पर है। जैसे—१ कोई मोदक बहुत प्रकारके

द्रव्यके संयोगसे उत्पन्न हुआ, वायु, पित्त, कफने जीस स्वरूप करके हणे, उसको स्वभाव कहिये। २ वोही लाडु, पक्ष, मास, दोय मास तक उसी स्वरूपमें रहे उसको स्थिति बंध कहिये। ३ वोही लाडु, तिखो कड़वो, कषायलो, खाटो, मीठो, होवे उसको रसबंध कहिये। ४ वोही लाडु थोड़ा भाखरका बांध्या हुवा छोटा होय (थोड़ा दलका निपज्या हुवा छोटा होय) ज्यादा दलका निपज्या हुवा मोटा होय उसको प्रदेशबंध कहिये।

च्यार प्रकारके बंधोंका कारण क्या है ?

प्रकृतिबंध और प्रदेशबंध योगसे होते हैं। स्थितिबंध और अनुभागबंध कषायसे होते हैं।

ये बंध जाण कर, बंधको तोडना चाहिये, बंधको तोड़नेसे निराबाध परम सुख पामे।

मोक्षतत्व। —

मोक्षतत्व जैसे सकल आत्माके प्रदेशसे

सकल कर्मका छुटना, सकल बंधनसे छुटना, सकल कार्यकी सिद्धि होवे, मोक्षगति पामे, उसको मोक्ष कहिये। मोक्षगति च्यार बोलसे प्राप्त होवे—१ ज्ञान, २ दर्शन, ३ चारित्र ४, तप।

मोक्षके नव द्वार ।

गाथा—संतपयपरूवणाया, दव्वप्पमाणं च खित्त फुसणा य। कालो य अंतरं भागो, भावि अप्पा बहु चेव ॥ १ ॥ नर गइ पणिंदि तस्स भव, सन्नि अहक्खा य। खइय समत्ते मुक्खोणहार केवल दंसण नाणे न सेसेसु ॥ २ ॥

१ सत्‌पद परूपणा—मोक्षगति पूर्वकालमें थी, वर्तमान कालमें है, आवता कालमें होवेगा, छति अस्ति है परन्तु आकाशके फूलके माफिक नास्ति नहीं।

---

२ द्रव्यद्वार—सिद्ध अनन्ता है, अभवी जीवसे अनन्त गुणा अधिक है, एक वनस्पतिकाय का

जीव वर्ज कर, दुजा २३ दण्डक के जीवोंसे सिद्धके जीव अनन्ता है।

३ क्षेत्रद्वार—सिद्धशिला प्रमाणे है, वह सिद्ध शिला ४५ लाख जोजनकी लांबी पहोली (चवड़ी) है, मध्यमें आठ जोजनकी जाड़ी है, अनुक्रमसे किनारे माखीकी पांख सें भी बहुत पतली है, सोना सरीखी, शङ्ख, चन्द्र, अङ्क; रत्न सपेद रुपाका पट, मोतीका हार सरीखी; क्षीर सागरके पाणीसे भी बहोत निर्मल है, उसकी परिधि १,४२,३०२४९ जोजन, १ गाउ, १७६६ धनुष्य, पुणी छव आंगल झाझेरी है, सिद्धके रहनेका स्थान सिद्धशिला पर एक जोजनके छेला गाउका छट्ठा भागमें है (याने ३३३ धनुष्य ३२ आंगुल प्रमाणे इतने क्षेत्रमें सिद्ध भगवंत रहे हुवे है)।

४ स्पर्शना द्वार—सिद्ध क्षेत्रसे कुछ अधिक सिद्धकी स्पर्शना है।

५ कालद्वार—एक सिद्ध आश्री आदि है पण अन्त नहीं, सर्व सिद्ध आश्री आदि नहीं और अन्त भी नहीं।

६ भागद्वार—सर्व जीवसे सिद्धके जीव अनन्तमें भाग है; लोकके असंख्यातमें भाग है।

७ भावद्वार—सिद्धमें क्षायिक भाव, केवलज्ञान, केवलदर्शन और क्षायिक समकित और प्रणामिक भाव जो सिद्धपणा समझना।

८ आंतराद्वार—सिद्ध भगवान संसारमें आवे नहीं, एक सिद्ध जहां अनन्त सिद्ध है और अनन्त सिद्ध वहां एक सिद्ध है, इस वास्ते सिद्धमें आंतरो नहीं।

९ अल्प बहुत्वद्वार—सबसे थोड़ा नपुंसक सिद्धा, उससे स्त्री संख्यात गुणी सिद्धी, उससे पुरुष संख्यात गुणा सिद्धा; एक समयमें नपुंसक १० सिद्ध होवें, स्त्री २० सिद्ध होवे, पुरुष १०८ सिद्ध होवे।

जो मोक्षमें जावे वो—१ भवसिद्धिक, २ बादर, ३ त्रस, ४ सन्नी, ५ पर्याप्ता, ६ वज्र ऋषभनाराचसंघयणवाला, ७ मनुष्यगतिवाला, ८ क्षायिक सम्यक्त्ववाला, ९ अप्रमादी, १० अवेदी. ११ अकषाइ. १२ यथाख्यातचारित्रवाला, १३ स्नातकनिग्रन्थी, १४ परमशुक्ललेशी, १५ पण्डित वार्यवान, १६ शुक्लध्यानी, १७ केवलज्ञानी, १८ केवलदर्शनी, १९ चरमशरीरी, ये १९ बोलवाला जीव मोक्षमें जावे; जघन्य दोय हाथकी उत्कृष्टी ५०० धनुष्यकी अवगाहना वाला जीव मोक्षमें जावे; ज० नव वर्षका उ० क्रोड पूर्वका आयुष्य वाला कर्म भूमिका होवे वो मोक्षमें जावे, मोक्ष याने सर्व कर्मसे आत्मा मुक्त हुवा, याने आत्मा अरूपी भावको प्राप्त हुवा, कर्मसे न्यारा हुवा. एक समयमें लोकके अग्रभागमें पहोंच्या, वहां अलोकसें अड़करके रहा पण अलोकमें जाय-सके नहीं, क्योंके वहां धर्मास्तिकाय नहीं, (याने

धर्मास्तिकायका साज नहीं) उससे वहां स्थिर रहा, दूजे समय अचल गतिको प्राप्त होवे, कोई वस्त वहांसे चवे नहीं, हाले चाले नहीं, अजर, अमर, अविनाशी पदको प्राप्त होवे, अनंत सुख की लहेरमें सदाकाल निमग्नपणे रहे।

पाठान्तर—

मोक्षका नव द्वार—१ छता पदकी परुपणा, २ द्रव्य परिमाण, ३ क्षेत्र परिमाण, ४ स्फशना परिमाण, ५ काल, ६ अन्तर, ७ भाग, ८ भाव, ९ अल्पबहुत्व।

१ सत्पद परुपणा—मोक्ष छती है, मोक्षमें जीव जावे, मोक्ष दस बोल करके शास्वति है।

१ गति—च्यार गतिमें से मनुष्य गतिमें मोक्ष है, तीनसे नहीं।

२ इन्द्रिय—पंचेंद्रियसे मोक्ष है, च्यारसे नहीं।

३ काय—छत्र कायमेंसे त्रस कायको मोक्ष है. पांच कायको नहीं ।

४ भव्य—भवी जीवको मोक्ष है, अभवी जीवको मोक्ष नहीं ।

५ सन्नी—सन्नीसे मोक्ष है, असन्नीसे मोक्ष नहीं। ६ चारित्र—पांच चारित्रमें से यथाख्यातचारित्रसे मोक्ष है, शेष (बाकी) च्यारसे मोक्ष नही ।

७ समकित—समकित पांच-१ उपशम समकित, २ सास्वादन, ३ क्षयोपसम, ४ वेदक, ५ क्षायिक, ये पांच समाकतमेंसे क्षायिक समकित से मोक्ष हे, च्यार समकितसे नहीं ।

८ आहार—अणाहारिकको मोक्ष है, आहारिकको नहीं ।

९ ज्ञान—पांच ज्ञानमेंसे केवलज्ञानसे मोक्ष है, च्यार ज्ञानसे नहीं ।

१०. दर्शन—च्यार दर्शनमेंसे केवलदर्शनसे मोक्ष है तीनसे नहीं। ये दस-बोल करके सिद्ध शाश्वता है।

२ द्रव्यद्वार—सिद्ध अनन्त है।

३ क्षेत्रद्वार-लोकाकाशके असंख्यातमें भाग सर्व सिद्ध रहते है।

४ स्पर्शनाद्वार—लोकके अग्रभाग फरसकर रह्या है।

५ कालद्वार—एक सिद्ध आश्री आदि है अन्त नहीं, सर्व सिद्ध आश्री आदि नहीं अंत नहीं।

६ आंतराद्वार—सिद्धाके मांहो मांही आन्तरो नहीं है, सब सिद्ध सरीखा है, एक सिद्ध वहां अनन्ता सिद्ध है।

७ भागद्वार—सिद्ध कितने भागमें हैं? सर्व जीव संसारमें है उसके अनन्तमें भागमें सिद्ध है, सिद्धसे सर्वजीव (२४ दण्डकरा जीव) अनन्त गुणा हैं।

८ भावद्वार—भाव पांच है, उसमेंसे चायक भाव तथा परिणामिक भाव प्रवर्ते है, जो परिणामिक हैं वो लोकमें भवी हैं वो भवी ही ज रहे परंतु अभवी होवे नहीं, अभव्य वो अभवी हीज रहे परंतु भवी होवे नहीं; और जीवरो अजीव होवे नहीं ऐसा परिणामिक भाव वो सिद्ध पणो जाणना।

९ नवमो अल्प बहुत्वद्वार—सबसे थोड़ा नपुंसक सिद्ध, उससे स्त्री संख्यात गुणी अधिकी, उससे पुरुष संख्यात गुणा अधिक सिद्ध हुवा।

(१५) पंदरहमें बोले आत्मा आठ--१ द्रव्य आत्मा, २ कषाय आत्मा, ३ जोग आत्मा, ४ उपयोग आत्मा, ५ ज्ञान आत्मा, ६ दर्शन आत्मा, ७ चारित्र आत्मा, ८ वीर्य आत्मा।

(१६) सोलहमें बोले दण्डक चोवीस—सात नारकी को एक दण्डक, दश भवनपतिका दश दण्डक, उनके नाम (१ असुर कुमार, २ नाग कुमार.३ सुवर्ण कुमार, ४ विद्युत्कुमार,

भावार्थ—जम्बूवृक्ष को फला हुआ देखकर छ पुरुषों को उसका फल खानेकी इच्छा हुई, इसमें जो पहिला कृष्ण लेश्या वाला था उसको मूलसे वृक्षको उखाड कर फल खानेकी इच्छा हुई। दूजा नीललेश्या वाले को वृक्षकी वडी-वडी शाखाको तोडकर फल खानेकी इच्छा हुई। तीजा कापोत लेश्या वाले को छोटी छोटी शाखा को तोडकर फल खानेकी इच्छा हुई। चौथा तेजोलेश्या वाले को फलका गुच्छा तोडकर फल खानेकी इच्छा हुई। पांचवां पद्म लेश्या वाले को पाका फल ही तोडकर खानेकी इच्छा हुई। छट्ठा शुक्ललेश्या वालेको वृक्षको कोई भी प्रकार की हरकत नुकसानी किया विना ही भूमि पर पड़ा हुआ फल खाने की इच्छा हुई। इस मुजब लेश्या के अनुसार जीवोका स्वभाव जान लेना।

कौन कौन लेश्यावाले जीव किस गतिमें जाता है उसका स्वरूप—

गाथा—किएहाए जाइ निरए, नीलाए था-वरो भवे। कापोताए तीरीए, तेयाए माणुसो भवे ॥१॥ पउमाए देवलोए, सासयट्ठाणं च सु-कललेसाए। इय लेसा भाव फल. पन्नत्ता वीयरागे हिं ॥ २ ॥

भावार्थ—कृष्णलेश्यावाला नरकमें जाता है, नीललेश्यावाला

स्थावरकायमें जाता है, कापोल लेश्यावाला तिर्यंचमें जाता है, तेजो लेश्या वाला मनुष्य गतिमें जाता है, पद्मलेश्यावाला देवगति में जाता है, और शुक्लेश्यावाला जीव मोक्षमें जाता है।

छ लेश्यावाले जीवोंका लक्षण—

कृष्ण लेश्यावंत का लक्षण—

अतिरौद्रः सदा क्रोधी, मत्सरी धर्म वर्जितः।
निर्दयो वैरसंयुक्तः कृष्णलेश्याधिको नरः ॥१॥

भावार्थ—अत्यन्त क्रूर परिणामी, निरतर क्रोध करनेवाला, दूसरे के गुणका द्वेषी, धर्म रहित, निर्दयी, जीवोंके साथ वैर भाव रखने वाला, पांच आश्रवको सेवने वाला इत्यादि लक्षण वाला जीव कृष्णलेश्यावत जानना ॥ १ ॥

नीललेश्यावत का लक्षण—

अलसो मन्दबुद्धिश्च, स्त्रीलुब्धः परवंचकः।
कातरश्च सदा मानी, नीललेश्याधिको नरः।२।

भावार्थ—आलसु, मंदबुद्धिवाला, स्त्रीलपट, दूसरे को ठगने वाला, कायर, सदा अभिमानी, तप रहित, प्रमादी, इत्यादि लक्षण वाला जीव नील लेश्यावन्त जानना ॥ २ ॥

कापोत लेश्यावन्तका लक्षण—

शोकाकुलः सदा रुष्टः, परनिन्दात्मशंसकः।

संग्रामे प्रार्थते मृत्युं, कापोतक उदाहृतः ॥ ३ ॥

भावार्थ—सदा शोकसे व्याकुल रहे, सदा रोष करनेवाला, परनिन्दक और आत्मप्रशंसक, सदा संग्राममें मृत्युको इच्छने वाला, लड़ाई करने में तत्पर, मिथ्यादृष्टि, झूठ बोलने वाला, कपटी इत्यादि लक्षणवाला जीव कापोत लेश्यावन्त जानना ॥ ३ ॥

तेजो लेश्यावन्त का लक्षण—

विद्यावान् करुणायुक्तः, कार्याकार्यविचारकः ।
लाभालाभे सदा प्रीतिस्तेजोलेश्याधिको नरः ।४।

भावार्थ—विद्यावान्, गुणवान्, कार्याकार्य के विचार दक्ष, लाभमें और अलाभमें समान भाव रखने वाला, मन वचन और काया का योग अच्छा प्रवर्त्तावे, विनयवान् इत्यादि लक्षणवाला जीव तेजोलेश्यावन्त जानना ॥ ४ ॥

पद्म लेश्याका लक्षण—

क्षमावांश्च सदा त्यागी, देवार्चनरतोद्यमी ।
शुचीभूतः सदानन्दी, पद्मलेश्याधिको नरः ॥ ५ ॥

भावार्थ—क्षमावान्, सदा भावत्यागी, अर्थात् ममत्वभाव रहित, दयावान्, सदा शुद्ध देवगुरुकी भक्ति वाला, आलस (प्रमाद) रहित, पवित्र मन वाला, सदा आनंदी स्वभाव वाला, इन्द्रिय दमन करनेवाला, थोड़ा बोले, इत्यादि लक्षणवाला जीव पद्मलेश्यावन्त जानना ॥ ५ ॥

शुक्ल लेश्यवन्त का लक्षण—

रागद्वेषविनिर्मुक्तः, शोकनिन्दाविवर्जितः ।
परमात्मता संपन्नः, शुक्ललेश्यो भवेन्नरः ॥ ६ ॥

भावार्थ—रागद्वेष करके रहित, शोक और परनिंदा से रहित, परमात्मा स्वरूपके ध्यानवाला, परमात्म परिणती वाला, अत्यन्त निर्मल स्वभावी, धर्म ध्यान शुक्ल ध्यान का ध्यान करने वाला, पांच सुमति तीन गुप्तिका पालनेवाला, इत्यादि लक्षण वाला जीव शुक्ल लेश्यावन्त जानना ॥ ६ ॥

(१८) अठारमें बोले दृष्टि तीन-१ सम्यगदृष्टि, २ मिथ्यादृष्टि, ३ सम्यगमिथ्यादृष्टि (मिश्र दृष्टि) ।

(१९) उगणीसमें बोले ध्यान च्यार-१ आर्त्तध्यान, २ रौद्रध्यान, ३ धर्मध्यान, ४ शुक्लध्यान । च्यार ध्यानका भेद ४८ ।

१ आर्तध्यानका आठ भेद—४ पाया, ४ लक्षण ।

४ च्यार पाया कहते हैं—

१ अमणुराणसंपओग संपउत्ते तस्स विप्प-

ओगस्सई समणागए अविभवई—खोटी (माठी) वस्तुका विजोग चिन्तवे ।

२ मणुण्ण संपओग संपउत्ते तस्स विप्पओगस्सई समणागए अविभवई-आछी वस्तुका संयोग चिन्तवे ।

३ आयकं संपओग संपउत्ते तस्स विप्पओगस्सई समणागए अविभवई-रोगादिक को वियोग चाहे ।

४ परभुसीय कामभोग संपओग संपउत्ते तस्स विप्पओगस्सइ समणागए अविभवई=परभवका सुखको नियाणो करे ।

४ लक्षण कहते हैं—

१ कंदणाया—आक्रन्द करे ।

२ सोअणाया—सोच करे ।

३ तिप्पणाया—आंसु नाखे ।

४ परिदेवणाया—विलापात करे ।

२ रौद्र ध्यानका आठ भेद-४ पाया ४ लक्षण ।

४ पाया कहते हैं—

१ हिंसानुबंधी—हिंसा करके राजी होवे।

२ मोसाणुबन्धी—झुठ बोलीने राजी होवे।

३ तेणाणबंन्धी—चोरी करके राजी होवे।

४ सारक्खणाणु बन्धी—दूसरेने बन्धीखाने नांखकर राजी होवे।

४ लक्षण कहते हैं—

१ उसण्ण दोसे—थोड़ी बातको घणो द्वेष राखे।

२ बहुल दोसे—थोड़ी बातरा घणो खेद राखे।

३ अण्णाण दोसे—अज्ञानके वश द्वेष घणो राखे।

४ आमरणांत दोसे—मरे जहांतक द्वेष छोड़े नहीं।

३ धर्मध्यानका १६ भेद—४ पाया, ४लक्षण, ४ आलंबन, ४ अणुप्पेहा।

४ पाया कहते हैं—

१ आणा विजए—श्री वीतराग की आज्ञा चिन्तवे।

२ आवाय विजए—कर्म आने (आवण) का ठिकाणा चिंतवे।

३ विवाग विजए—कर्मका विपाक चिंतवे।

४ संठाण विजए—१४ राजलोकका स्वरूप चिंतवे।

४ लक्षण कहते है—

१ आणारूई—आज्ञाकी रुची करे।

२ निसग्गरूई—जाति स्मरणके जोगसे धर्म की रुची करे।

३ उपएसरूई—उपदेश सुणकर धर्मकी रुची करे।

४ सुत्तरूई—सूत्र सुणकर धर्मकी रुची करे।

४ आलम्बन कहते हैं—

१ वायणा—सूत्र की वांचना देवे और सीखे

२ पडि पूछणा—सिद्धांत का प्रश्न पूछे ।
३ परियट्टणा—बारंवार सूत्र गणे (वारं-वार सूत्र भणे)
४ धर्मकथा—वखाण वांचे सुणे ।

४ अणुप्पेहा कहते है—

१ एगत्वाणुप्पेहा—ऐसा चिंतवे की हे जीव ! तूं एकलो आयो एकलो जावसी ।
२ अणीच्चाणुप्पेहा—ऐसा चिंतवेकी हे जीव ! संसारिक पदार्थ सब अनित्य है ।
३ असरणाणुप्पेहा—ऐसा चिंतवे की हे जीव ! धर्म विना तूझे कोई सरणा नहीं ।
४ संसाराणुप्पेहा—ऐसा चिंतवेकी हे जीव ! जितने जीव हैं वह सर्व आप आपके कर्म करके परिभ्रमण करते हैं ।

४ शुक्ल ध्यानका १६ भेद-४ पाया, ४ लक्षण, ४ आलम्बन, ४ अणुप्पेहा ।

४ पाया कहते हैं—

१ पुहुत्त वियक्के अविहारी-एक जीवको और अपणा स्वरूपको घणी जायगा चिंतवे (उत्पात, व्यय, ध्रूव इतनो काल, इतनी स्थीति इत्यादि)

२ एगत वियक्के अविहारी---एक जीव स्वरूपने चिंतवे ।

३ सुहुम किरिये अनिटी-सुक्ष्म क्रियासे नवर्ते ।

४ समुच्छिन्न किरिये अपडवाइ-जोगादिक निरोध करे ।

४ लक्षण कहते हैं --

१ अव्वए---भय संज्ञा जीते ।

२ असंमोहे--देवतादिकका चरित्रसे मुरभावे नहीं ।

३ विवेग—कर्मजालसे विवेग करे ।

४ विउसग्ग-कर्मजालसे न्यारो होवे ।

४ आलम्बन कहते है---

१ खंति—क्षमा करे।

२ मुत्ति—निर्लोभ होवे।

३ अज्जवे—सरल होवे।

४ मद्दवे—कोमल होवे।

४ अणुप्पेहा कहते हैं—

१ अणच्चाणुप्पेहा—संसारको अन्यत्वपणो चिंतवे।

२ विप्परिणामाणुप्पेहा—पुद्गलको अन्यत्व-पणो चिंतवे।

३ असुभाणुप्पेहा—कर्मका विपाक अशुभ चिंतवे।

४ अवायाणुप्पेहा—जीव को अखंडित चिंतवे।

(२०) वीसमें बोले षट द्रव्यका ३० भेद, द्रव्य छव; उनके नाम-१ धर्मास्तिकाय, २ अधर्मास्तिकाय, ३ आकाशास्तिकाय, ४ काल द्रव्य, ५ जीवास्तिकाय, ६ पुद्गलास्तिकाय।

५ धर्मास्तिकायका पांच भेद—

१ द्रव्य थकी—एक द्रव्य, २ क्षेत्र थकी—आखालोक प्रमाणे, ३ काल थकी—आदि अंत रहित, ४ भाव थकी—अरूपी, वर्ण नहीं, गंध नहीं, रस नहीं, स्पर्श नहीं, ५ गुण थकी—चलण गुण, पाणीमें माछलाको दृष्टान्त, जैसे पाणीके आधार माछला चाले, इसी तरह जीव अजीव (घड़ी विगेरह) दोनुं धर्मास्तिकायके आधार चाले।

अधर्मास्ति कायका पांच भेद—

१ द्रव्य थकी एक द्रव्य, २ क्षेत्र थकी—आखा लोक प्रमाणे, ३ काल थकी—आदि अन्त रहित, ४ भाव थकी—अरूपी, वर्ण नहीं, गन्ध नहीं, रस नहीं, स्पर्श नहीं, ५ गुण थकी—स्थिर गुण, थाका पन्थीने छायांको दृष्टान्त, जैसे थाका पन्थीने छायांको आधार उसी माफिक जीव अजीवने अधर्मास्तिकायको आधार।

आकाशास्ति कायका पांच भेद

१ द्रव्यथकी-एक द्रव्य, २ क्षेत्र थकी-लोकालोक प्रमाणे, ३ काल थकी-आदिअंत रहित, ४ भाव थकी-अरुपी, वर्ण नहीं, गन्ध नहीं, रस नही, स्फर्श नही, ५ गुण थकी,-पोलाड़ गुण आकाशमें विकाश भीतमें खूंटीको दृष्टांत, दूधमें पतासाको दृष्टांत।

काल द्रव्यका पांच भेद-

१ द्रव्यथकी,-अनंता द्रव्य, २ क्षेत्र थकी-अढाई द्वीप प्रमाणे, ३ कालथकी-आदिअंत रहित, ४ भावथकी-अरूपी, वर्ण नहीं, गंध नहीं, रस नहीं स्फर्श नहीं; ५ गुणथकी-वर्तन गुण नयाने जुनो करे जुनाने खपावे, कपड़े कैंचीरो दृष्टांत।

जीवास्ति कायका पांच भेद-

१ द्रव्य थकी-जीव अनंता, २ क्षेत्र थकी-

आखा लोक प्रमाणे, ३ कालथकी-आदिअंत रहित, ४ भाव थकी-अरूपी, वर्ण नहीं, गंध नहीं, रस नही, स्फर्श नही, ५ गुण थकी-चेतना गुण, चन्द्रमारी कलारो दृष्टांत।

पुद्गलास्तिकायका पांच भेद-

१ द्रव्य थकी-पुद्गल अनंता, २ क्षेत्र थकी-आखालोक प्रमाणे, ३ कालथकी-आदिअंत रहीत, ४ भाव थकी-रूपी. वर्ण है, गंध है, रस है, स्फर्श है; ५ गुण थकी-पूर्ण गलन सड़न विध्वंसण गुण, बादलाको दृष्टांत जैसे मिले और बिखरे।

खट द्रव्य ऊव

१ जीव द्रव्य किसको कहते हैं ?

जिसमें चेतना गुण पाया जाय, उसको जीवद्रव्य कहते हैं।

जीव द्रव्य कितने और कहाँ हैं ?

जीवद्रव्य अनंतानन्त है और वे समस्त लोकाकाशमें भरे हुए हैं।

एक जीव कितना बड़ा है?

एक जीव प्रदेशोंकी अपेक्षा लोकाकाशके बराबर है, परंतु संकोच विस्तारके कारण अपने अपने शरीरके प्रमाण है। और मुक्ति-जीव अंतके शरीर प्रमाण हैं।

लोकाकाशके बराबर कौनसा जीव है?

मोक्ष जाननेसे पहिले समुद्घात करनेवाला जीव लोकाकाशके बराबर होता है

२ पुद्गल द्रव्य कीसको कहते हैं?

जीसमें स्पर्श, रस गंध, और वर्ण पाये जाय।

पुद्गल द्रव्यके कीतने भेद हैं?

दोय भेद है-एक परमाणु दूसरा स्कन्ध।

परमाणु किसको कहते हैं?

सबसे छोटे पुद्गलको परमाणु कहते है

(जिसका दोय टुकड़ा नहीं होय

स्कन्ध किसको कहते हैं ?

अनेक परमाणुओं के बन्धन को स्कन्ध कहते हैं।

पुद्गल द्रव्य कितने और उनकी स्थिति कहां है ?

पुद्गल अनन्तानन्त है और वे समस्त लोकाकाश में भरे हुए हैं।

३ धर्म द्रव्य किसको कहते हैं ?

गतिरूप परिणमे जीव और पुद्गलको जो गमनमें सहकारी हो, उसको धर्मद्रव्य कहते हैं। जैसे—मछली के लिए जल। धर्म खण्डरूप है किंवा अखण्डरूप है और इनकी स्थिति कहां है ? धर्म एक अखण्ड द्रव्य है और यह समस्त लोकाकाशमें व्याप्त हैं।

४ अधर्म द्रव्य किसको कहते हैं ?

गति पूर्वक स्थिति रूप परिणमें जीव और पुद्गलको जो स्थिति में सहकारी हो उस

को अधर्म द्रव्य कहते हैं।

अधर्म खण्डरूप है किंवा अखण्डरूप है ? और इनकी स्थिति कहां है ? अधर्म द्रव्य एक अखंड द्रव्य है और वह समस्त लोकाकाशमें व्याप्त है।

५ आकाश द्रव्य किसको कहते हैं ?

जो जीवादिक पांच द्रव्योंको ठहरनेके लिये जगह दे।

आकाश के कितने भेद हैं ?

आकाश एक ही अखण्ड द्रव्य है।

आकाश कहां पर है ?

आकाश सर्व व्यापी है।

६ कालद्रव्य किसको कहते हैं ?

जो जीवादिक द्रव्योंके परिणमनमें सहकारी हो, उसको कालद्रव्य कहते हैं। जैसे कुम्हारके चाकके घूमने के लिये लोहे की कीली।

कालद्रव्यके कितने भेद हैं ?

दोय हैं--एक निश्चयकाल, दुसरा, व्यवहार काल।

निश्चय काल किसको कहते हैं ?

कार्ल द्रव्यको निश्चयकाल कहते हैं।

व्यवहारकाल किसको कहते हैं ?

कालद्रव्यकी घड़ी, दिन, मास आदि पर्यायों को व्यवहार काल कहते हैं।

कालद्रव्यके कितने भेद रूप हैं और उनकी स्थिति कहां है ? लोकाकाशके जितने प्रदेश हैं उतने ही कालद्रव्य हैं और लोकाकाशके एक एक प्रदेशपर एक एक कालद्रव्य (कालाणु) स्थिति हैं।

अस्तिकाय-

अस्तिकाय किसको कहते हैं ?

वहुप्रदेशी द्रव्यको अस्तिकाय कहते हैं।

अस्तिकाय कितने हैं ?

पॉच हैं—जीव, पुद्गल, धर्म, अधर्म, और

आकाश। इन पांचों द्रव्यको पञ्चास्तिकाय कहते हैं। कालद्रव्य बहुप्रदेशी नहीं है, इसलिये वह अस्तिकाय भी नहीं है।

यदि पुद्गल परमाणु एक प्रदेशी है, तो वह अस्तिकाय कैसे हुआ? पुद्गलपरमाणु शक्ति की अपेक्षासे अस्तिकाय है अर्थात् स्कंधरूपमें होकर बहु प्रदेशी हो जाता है, इसलिये उपचार से अस्तिकाय है

लोकाकाश—

लोकाकाश किसको कहते हैं ?

जहांतक जीव, पुद्गल, धर्म, अधर्म, काल ये पांच द्रव्य हैं उसको लोकाकाश कहते हैं।

लोकाकाशके बराबर कौनसा जीव है ?

मोक्ष जानेसे पहिले समुद्घात करनेवाला जीव लोकाकाश के बराबर होता है।

अलोकाकाश—

अलोकाकाश किसको कहते हैं

लोकसे बाहरके आकाश को अलोकाकाश कहते हैं।

लोक—

लोककी मोटाई, ऊंचाई, चौड़ाई कितनी है?

लोककी मोटाई उत्तर और दक्षिण दिशामें सब जगह सात राजू है, चौड़ाई पूर्व और पश्चिम दिशामें मूलमें (नीचे जड़में) सात राजू है। ऊपर क्रमसे घटकर सात राजूकी ऊंचाई पर चौड़ाई एक राजू है। फिर क्रमसे बढ़कर साढ़े दश राजूकी ऊंचाई पर चौड़ाई पांच राजू है। फिर क्रमसे घटकर चौदह राजूकी ऊँचाईपर एक राजू चौड़ाई है और ऊर्ध्व और अधोदिशामें ऊँचाई चौदह राजू है।

११ द्वार—

छव (षट्) द्रव्यपर कर्मग्रन्थमें इग्यारह द्वार चले वो कहते हैं—

इग्यारा द्वारका नाम—१ प्रणामी, २ जीव, ३ मुत्ता (मूर्ति), ४ सपएसा (सर्व प्रदेशी), ५ एगा (एक), ६ खित्ते (क्षेत्र), ७ क्रिया, ८ णिच्चं (नित्य), ९ कारण, १० कर्त्ता, ११ सव्व गइ इयर पवेसा (सब गति)।

(१) प्रणामी कहेता निश्चयमें छवही द्रव्य प्रणामी है। (प्रणम्या है, व्याप्या है) व्यवहार में जीव और पुद्गल दोय द्रव्य प्रणामी है (आखालोकमें प्रणम्या है), बाकी चार अप्रणामी है।

(२) जीव कहेता एक तो जीव है बाकी पांच द्रव्य अजीव है।

(३) मुत्ता कहेता एक पुद्गल तो मूर्तिक है बाकी पांच द्रव्य अमूर्तिक है।

(४) सपएसे कहेता पांच द्रव्य तो सप्रदेशी है और एक काल द्रव्य अप्रदेशी है।

(५) एगे कहेता धर्मास्ति, अधर्मास्तिः

आकाशास्ति ये तीन द्रव्य तो एक एक है, और जीव, पुद्गल, काल ये तीन द्रव्य अनेक हैं याने अनन्ता है।

(६) खित्ते कहेता आकाशास्तिकाय तो क्षेत्री है. बाकी पांच द्रव्य अक्षेत्री है।

(७) क्रिया कहेता निश्चयमें छव ही द्रव्य सक्रिय (याने क्रिया करके सहित) है, अपनी अपनी क्रिया करे, व्यवहारमें जीव और पुद्गल क्रिय हैं (क्रिया करे) च्यार द्रव्य अक्रिय है।

(८) णिच्चं कहेता निश्चयमें छव ही द्रव्य नित्य, व्यवहारमें जीव और पुद्गल दोय द्रव्य अनित्य बाकी च्यार द्रव्य नित्य।

(६) कारण कहेता जीवके पांच ही द्रव्य कारण है, जीव पांचों के अकारण है (जीव द्रव्य अकारण, बाकी पांच द्रव्य कारण) वा पांच द्रव्य अकारण. एक जीव द्रव्य कारण भी संभवे है।

(१०) कर्ता कहेता निश्चयमें छवें ही द्रव्य अपने स्वरूपका कर्ता है, व्यवहार में जीवद्रव्य कर्ता है, पांच द्रव्य अकर्ता है ।

(११) सव्व गई, इयर पवेसा कहता आकाशास्तिकाय तो सर्व गति, ५ द्रव्य असर्व गति; आकाशास्ति काय रे भाजनमें (पांच) द्रव्य समावे (आकाश द्रव्य सर्व दूर व्याप रहा है और पांच द्रव्यने आकाश रूप भाजन में प्रवेश किया है)

२१ इक्कीसवें बोले राशि दोय—जीवराशि, अजीव राशि ।

संसारी जीवका विशेष प्रकारे ५६३ भेद है

नारको का १४ भेद ।
तिर्यंच का ४८ भेद ।
मनुष्यका ३०३ भेद ।
देवता का १९८ भेद ।

ए पांच सो तेसठ भेद हुआ उसको वि-

स्तार से कहते हैं:—

नारकीका चउदे भेद—

नारकी का अप्रजापता और प्रजापता ए चउदे।

नारकी का नाम और गोत्र—

१ घम्मा—१ रत्नप्रभा-काले रत्न सरीखी।
२ वंसा—२ सक्कराप्रभा-मुरड है।
३ सिला—३ वालुकाप्रभा-वालु है
४ अंजणा, ४ पंकप्रभा-लोही मांसको कादो है।
५ रिट्ठा, ५ धूम प्रभा-धुवो है।
६ मग्गा, ६ तमः प्रभा-अन्धकार है।
७ मागवई, ७ तमस्तमा प्रभा-अन्धकार से अन्धकार याने घणो अन्धकार है।

तिर्यंचका अड़तालीस भेद

१ सुक्ष्म पृथ्वीकाय. २ बादर पृथ्वीकाय, ३ सूक्ष्म अप्काय, ४ बादर अप्काय, ५ सूक्ष्म

तेउकाय, ६ बादर तेउकाय, ७ सूक्ष्म वाउकाय ८ बादर वाउकाय, ९ सूक्ष्म वनस्पति, १० प्रत्येक वनस्पति, ११ साधारण वनस्पति, १२ बे-इन्द्रिय, १३ तेइन्द्रिय, १४ चौइन्द्रिय, १५ अ-सन्नी (समूर्छिम) जलचर, १६ सन्नी (गर्भज) जलचर, १७ असन्नी थलचर, १८ सन्नी थलचर, १९ असन्नी उरपरिसर्प, २० सन्नी उरपरिसर्प २१ असन्नी भुजपरि सर्प, २२ सन्नी भुजपरि सर्प, २३ असन्नी खेचर, २४ सन्नी खेचर,

इन सबका प्रर्याप्ता और अपर्याप्ता यह दो दो भेद मिलकर ४८ भेद हुए।

तिर्यंच पंचेन्द्रिय—

जलचर केने कहीये ? जो जलमें चले उसको जलचर कहीजे जैसे—मच्छ, कच्छ, काछवा, डेडका इत्यादिक इनका कुल १२॥ लाख क्रोड़ है।

थलचर केने कहिये? जो जमीन उपर चाले

उसको थलचर कहिये इनका च्यार भेद—

१ एक खुरा—घोड़ा, गधा खच्चर इत्यादिक।

२ दोय खुरा—उंट, गाय, भैंस, बलद, बकरा हरण, ससीया, इत्यादिक।

३ गण्डीपद (गण्डी पया)-हाथी, गेंडा इत्यादिक।

४ श्वान पद (सणपया) (जो पंजे नखवाला होवे) जैसे--वाघ, कुत्ता, बीली, शियाल, जरख, रीछ, बंदर, सिंह, चीता, इत्यादि इनका कुल १० लाख क्रोड है।

उरंपरि केने कहीये? जो पेटसे चाले उसको उरपरि सर्प कहिजे, जैसे--सर्प, अजगर, अशालीयो—(दोय घड़ीमें ४८ कोस (गउ) लांबो हुवे, चक्रवर्तीकी राजधानी नीचे, अथवा नगरके खाल हेठे उपजे, उसको भस्म नामा दाह हुवे तो ४८ गउ की माटी खायजावे, जमीन थोथी होजाय, चक्रवर्ती की सेन्या थोथी जमीन में

उतर जाय, ऐसी पोलाड़ करदेवे उसको असालीयो कहीजे । चक्रवर्तीरे सेन्यारो विध्वंस होणेके (काल) समय ही असालीओ उपजे) । महुरग एक हजार जोजनको लांबो सर्प अढाई द्वीप बाहर है उसको महुरग कहीजे, इनका कुल १० लाख कोड़ है ।

भुजपरि केने कहिये ? जो भुजासे चाले उसको भुजपरि केहीजे जैसे—कोल, नवलीयो, उंदरा, गीलारी, चनरा गोह, पाटड़ा गोह इत्यादिक; इनका कुल ९ लाख कोड़ है ।

खेचर केने कहीये ? जो आकाश में उड़े । इनका च्यार भेद—

१ चर्म पंखी—चमड़े जैसी पांख होवे, ये अढाई द्वीप मांहे तथा बाहर दोनुं जागा है ।

२ रोमय पंखी—सुवाली पांखका पंखी, जैसे मोर, कबुतर, कागला, मेना, सुवा, पोपट, बुगला, कोयल, चील, सकरा, तीतर, बाज

इत्यादिक ये अढाई द्विप मांहे तथा वाहीर दोनुं ठीकाणे है।

३ समुद्ग पंखी--इनकी पांख डाभ माफक बीड़ोड़ी रेवे ये पक्षी अढाई द्वीप बहार है।

४ वीतत पंखी-इनकी पांख सदाइ फाड्योड़ी रेवे, ये पक्षी अढाई द्वीप बहार है; इनका कुल १२ लाख क्रोड है।

मनुष्य के ३०३ भेद।

पन्द्रह कर्मभूमि तीस अकर्मभूमि, और छप्पन अन्तरद्वीप, यह १०१ गर्भज मनुष्यका पर्याप्ता, और १०१ अपर्याप्ता ये २०२। और १०१ समुर्च्छिम मनुष्यका अपर्याप्ता ये ३०३ भेद हुवा।

गर्भज मनुष्यको विस्तार—

१५ कर्मभूमि — ५ भरत ५ ईरवत ५ महाविदेह ये पनरे कर्मभूमि मनुष्यका क्षेत्र कहां है

एक लाख योजनका जम्बूद्वीप है, उसमें से १ भरत और १ ईरवत १ महाविदेह ये ३ जम्बूद्वीपमें हैं ; उसके चारों तरफ दोय लाख जोजनका लवणसमुद्र है, उसके चारों तरफ च्यार लाख जोजनको धातकी खंड है, उसमें २ भरत २ इरवत २ महाविदेह ये छव क्षेत्र हैं ; उसके चारों तरफ आठ लाख जोजनको कालोदधि समुद्र है ; उसके चोतरफ आठ लाख जोजनको अर्ध पुष्कर द्वीप है, उसमें २ भरत २ इरवत २ महाविदेह ये छव क्षेत्र हैं, ये पंदरह क्षेत्र। पंदरह कर्मभूमि किसको कहते हैं? जहां राजा राणी की रीत है, देणों देवे, लेणों लेवे, कवांरा कवांरी परणे, साधु साध्वीका व्यवहार है, तथा ७२ कला पुरुषोंकी और ६४ कला स्त्रियोंकी १०० प्रकार का शिल्प कर्म जहाँ पर यह सब विद्यमान हो तथा त्रेसठ शलाका पुरुष सहित, असो तरवारकी कमाई, मसी लेखनकी कमाई, कसी किसानकी कमाई,

करके पेट भरे. खेत, सेत, उवीखेत। खेत कहेता खेड्या धान नीपजे; सेत कहेता सींच्यां धान नीपजे; उवी खेत कहेता अड़क धान उपजे, धान चार प्रकार को-सीरो, डोडो, उम्बी, फली; सिरो (सीटो) बाजरोरो. मक्कीयेरो, आद देइने अनेक भेद। डोडो. अफीमरो. धतुरेको आद देई अनेक भेद। उम्बी जवारकी, चांवलांकी आदि देई अनेक भेद। फली मोठारी, गवाररी आद देईने अनेक भेद।

३० अकर्मभूमि मनुष्य---५ हेमवय, ५ हीरण्यवय. ५ हरीवास. ५ रम्यकवास, ५ देवकुरु, ५ उत्तरकुरु ये तीस।

१ हेमवय, १हिरण्यवय. १ हरिवास, १ रम्यकवास १ देवकुरु, १ उत्तरकुरु ये छव क्षेत्र जम्बूद्वीप में हैं।

२ हेमवय, २ हिरण्यवय, २ हरिवास, २ रम्यक वास, २ देवकुरु, २ उत्तर कुरु ये बारह क्षेत्र धातकी खण्डमें हैं

२ हेमवय, २ हिरण्यवय. २ हरिवास. २ रम्यक वास, २ देवकुरु. २ उत्तरकुरु ये बारह क्षेत्र अर्द्ध पुष्कर द्वीपमें हैं।

अकर्मभूमि किसको कहते हैं ? जहां राजा नहीं, राणा नहीं, कवांरा कवांरी परणे नहीं. देणो देवे नहीं, लेणो लेवे नहीं. साधु साध्वी रो व्यवहार नहीं, ६३ शलाका पुरुष रहित. (२४ तिर्थंकर १२ चक्रवर्त्ति ९ बलदेव ९ वासुदेव ९ प्रतिवासुदेव) विहरमाण. गण-धर विगैरह करके रहित. असी नहीं. मसी नहीं, कसी नहीं. जिनको दस प्रकारके कल्प वृक्ष आशा पूर्ण करे उनके नाम---

मतङ्गय भिङ्गा. तुडियङ्गा दिव जोई चित्तगा।
चित्तरसा मणवेगा. गिहगारा आणीयगणाउ॥

१ मतङ्गय कहेता मधु. मणिरस. सुगन्धादिक पाणीका दातार।

२ भिङ्गा कहेता अनेक प्रकारका रत्न जड़ित

भोजन का दातार ।

३ तुडियंगा कहेता ४९ उगणपचास प्रकारका वाजिंत्र, नाटक का दातार ।

४ दिव कहेता रत्न जड़ावका दिवांके दातार ।

५ जोई कहेता सूर्य्यकी ज्योति समान ज्योति के दातार ।

६ चित्तगा कहेता चित्राम सहित फूलकी माला का दातार ।

७ चित्तरसा कहेता चित्तने गमे ऐसा अनेक प्रकारका भोजनादिकका दातार ।

८ मणवेगा कहेता रत्न जड़तका आभुषण (गहणा) का दातार ।

९ गीहगारा कहेता (४२) बयांलीस भोमिया महेलका दातार ।

१० अणियगणाउ कहेता अनेक जातका रत्न जड़तका नाकरे वायरासें उड़े ऐसा वस्त्रका दातार ।

छप्पन अन्तरद्वीपके मनुष्य, छप्पन अन्तर द्वीपमें हैं। अब छप्पन अन्तर द्वीप कहते है--- जम्बूद्वीपके भरत क्षेत्र की मर्यादाको करणहार चुल हिमवंत नामे पर्वत है, पीलो सुवर्णमय हैं सो जोजन को ऊँचो, पच्चीस जोजन को जमीन में उंडो, एक हजार बावन जोजन, बारह कलाको पहोलो (चवड़ो) है, २४६३२ जोजन लम्बो है इसको बांह ५३५० जोजन और पनरह कलाकी है, इसको जीवा २४६३२ जोजन पुणकला की है इसकी धनुष्य पीठीका २५२३० जोजन और च्यार कलाकी है, उसके पूर्व पश्चिमके छेड़े दोय दोय डाढा निकली हुई हैं, एक एक डाढा चोरासीसे चोरासीसे जोजन झाझेरी लम्बी है, एक एक डाढा उपर सात सात अन्तरद्वीप हैं, वो किस तरहसे हैं ? जम्बूद्वीपकी जगतीसे ३०० जोजन जावे तब ३०० जोजनको लम्बो चोड़ो पहेलो अन्तरद्वीप आवे १, वहांसे ४०० जोजन जावे

जब ४०० जोजनको लम्वो चोड़ो दुजो अन्तर द्वीप आवे २, वहांसे ५०० जोजन जावे जब ५०० जोजन को लम्वो चोड़ो तीजो अन्तर द्वीप आवे ३. वहांसे ६०० जोजन जावे जब ६०० जोजनको लम्वो चोड़ो चोथो अन्तर द्वीप आवे ४। वहांसे ७०० जोजन जावे जब ७०० जोजन को लम्वो चोड़ो पांचमो अन्तर द्वीप आवे ५, वहांसे ८०० जोजन जावे जब ८०० जोजनको लम्वो चोड़ो छट्ठो अन्तर द्वीप आवे ६, वहांसे ९०० जोजन जावे जब ९०० जोजन को लम्वो चोड़ो सातमो अन्तरद्वीप आवे ७, इस तरह एक एक डाढ़ापर सात सात अन्तरद्वीप है. उसको च्यारसुं गुणा करता २८ अठावीस अन्तरद्वीप हुवा; ये २८ चुलहिमवंत पर्वतके दोनों छेड़े की च्यार डाढा उपर है। इसी तरह इरवत क्षेत्रकी मर्यादाको करणहार शिखरी नामे पर्वत है, वो चुल हेमवंत-पर्वतके माफिक है, इस शिखरी पर्वतके पूर्व पश्चिम

के छेड़े अठावीस अन्तरद्वीप है। इन दोनों पर्वतके छेड़े ५६ अन्तरद्वीप जाणना। (इनका पूर्ण स्वरूप जीवाभिगम सूत्र से जानना)

समुच्छिम मनुष्यका १०१ भेद, चवदा स्थानमें १०१ समुच्छिम मनुष्य उपजे सो कहते हैं—

(१) उच्चारेसुवा कहेता बड़ी नीति (विष्ठा) में उपजे।

(२) पासवणेसुवा कहेता लघु नीति (पेसाब) में उपजे।

(३) खेलेसुवा कहेता खेंखार कफमें उपजे।

(४) संघाणेसुवा कहेता नाकका श्लेष्म (सेडा) में उपजे।

(५) वंतेसुवा कहेता वमनमें (उल्टीमें) उपजे।

(६) पित्तेसुवा कहेता पित्तमें उपजे।

(७) पूए सुवा कहेता राध (रसी) में उपजे।

(८) सोणीये सुवा कहेता रुधिर (लोही) में उपजे।

(९) सुक्के सुवा कहेता वीर्यमें उपजे।

(१०) सुक्क पोग्गल पड़िसाड़ीये सुवा कहेता सुका हुआ वीर्यका पुद्गल पीछा आला होणे से उपजे।

(११) विगयजीवकलेवरेसुवा (मृत कलेवरे सुवा) कहेता जीव रहित शरीर में उपजे (कलेवर में उपजे)

(१२) इत्थी पुरुष संजोगे सुवा कहेता स्त्री पुरुषका संजोगसे उपजे।

(१३) नगर निधमणेसुवा कहेता नगरका खाल, गट्टर मोरी वगेरहमें उपजे।

(१४) सव्वे असुई ठाणे सुवा कहेता सर्व असुची स्थान में उपजे।

इति ३०३ मनुष्यका भेद समाप्त।

देवताके १९८ (एकसो अठाणवें) भेद-

१० भुवनपति, १५ परमाधामी. १६ वाणव्यन्तर १० तिर्यक्जृंभिका, १० ज्योतिषी, ३ किल्-विषी, १२ देवलोक, ९ नव लोकांतिक, ९ नवग्रैवेयक, ५ अनुत्तर विमाण ये ९९ जातिका पर्याप्ता अपर्याप्ता ये १९८ भेद हुए।

१० भुवनपति (इनका नाम सोलमा बोलसे जाणना)

१५ परमाधामीका नाम—१ अम्बे, २ अम्बरसे ३ शामे (मे), ४ सबले, ५ रुद्र, ६ महारुद्र, ७ काले, ८ महाकाले, ९ असिपत्र, १० धनुषपत्ते ११ कुम्भ, १२ बालु, १३ वेयरणी, १४ खर-खरे, १५ महाघोषे।

१६ वाणव्यन्तरका नाम—१ पिशाच, २ भूत, ३ जक्ष, ४ राक्षस, ५ किन्नर, ६ किंपुरुष, ७ महोरग, ८ गन्धर्व, ९ आणपन्नी, १० पाण-

पन्नी, ११ इसीवाइ, १२ भुइवाई, १३ कं-
दीय, १४ महाकन्दीय, १५ कोहण्ड. १६
पयङ्गदेव ।

१० तियग् जृम्भिकका नाम—१ अन्न जृम्भिक, २
पाणं जृम्भिक, ३ लयण जृंभिक, ४ सयण
जृंभिक ५ वस्त्र जृम्भिक, ६ फूल जृंभिक,
७ फल जृम्भिक, ८ फलफूल जृम्भिक, ९
वीज जृम्भिक. १० अवियत जृम्भिक ।

१० ज्योतिषी का नाम—१ चन्द्रमा, २ सूर्य. ३
ग्रह, ४ नक्षत्र, ५ तारा, ये पांच अढोद्वीप में
चल है और पांच अढीद्वीप बाहिर स्थिर है ।

३ किल्विषीका ना—१ त्रण पल्यरी स्थितिवाला,
२ त्रण सागरको स्थिति वाला, ३ तेरह सा-
गरको स्थिति वाला। तीन पल्यवाले
ज्योतिषी देवोंके ऊपर हैं परन्तु प्रथम द्वितीय
स्वर्ग के नीचे हैं। तीन सागर वाले प्रथम
द्वितोय स्वर्गके ऊपर हैं किंतु तृतीय चतुर्थ

स्वर्गके नीचे हैं। तेरह सागरकी स्थितिवाले किल्विषी देव पांचवें स्वर्गके ऊपर हैं छठे स्वर्गके नीचे हैं।

१२ बारह देवलोकका नाम—१ सुधर्म, २ इशान ३ सनत कुमार, ४ माहेंद्र, ५ ब्रह्म, ६ लांतक ७ महाशुक्र, ८ सहसार, ९ आणत, १० प्राणत, ११ आरण, १२ अचुय (अच्युत)।

९ नवलोकांतिकका नाम-

सारस्स माइच्च, वन्हि वरुण गजतोया। तुसीया अव्वबाहा, अगीचा चेव रीट्ठा य ॥ १ ॥

१ सारस्सय (सारस्वत) २ माइच्च [आदित्य], ३ वन्हि, [वहनि], ४ वरुण, ५ गजतोया, ६ तंसीया, ७ अव्याबाधा, ८ अग्गिचा, ९ रीट्ठा।

९ नव ग्रैवेयकका नाम-

१ भद्दे, २ सुभद्दे, ३ सुजाये, ४ सुमाणसे, ५ पीयदंसणे, ६ सुदंसणे, ७ अमोहे, ८ सुपडिबद्धे, ९ जसोधरे।

५ पांच अनुत्तर विमाणका नाम--

१ विजय. २ विजयंत. ३ जयंत, ४ अपराजित. सर्वार्थ सिद्ध ।

अजीव राशिका ५६० भेद ॥

धम्मा धम्मागासा, तिय तिय भेया तहेव अद्धाय।
ए ए चउ सुविदव्वे, खिते काले य भाव गुणे ॥१॥

अजीव अरूपीका ३० और अजीवरूपीका ५३० ये कुल ५६० भेद ।

अजीव अरूपीका ३० भेद—

(३) धर्मास्तिकायका खंध, देश, प्रदेश ये तीन ।
(३) अधर्मास्तिकाय का खंध, देश, प्रदेश ।
(३) आकाशास्तिकाय का खंध, देश. प्रदेश ।
(१) कालद्रव्यको एक भेद ।

(५) धर्मास्तिकाय का पांच भेद-१ द्रव्य. २ क्षेत्र, ३-काल, ४ भाव, ५ गुण ।

५ अधर्मास्ति कायका पांच भेद-१ द्रव्य, २ क्षेत्र, ३ काल, ४ भाव, ५ गुण।

५ काल द्रव्यका पांच भेद-१ द्रव्य, २ क्षेत्र, ३ काल, ४ भाव, ५ गुण।*

अजीव रूपीका ५३० भेद ॥

संठाण वण रस य गंधे, फासे अ तिन्नि सयक्कमसो।
छयालीसं भेया, चुलसीय सयं सरूवीणं ॥ १ ॥

१०० संठाण ५—परिमंडल, वट, त्रंस, चोरस, आयत एक एक का भेद २०×५=१००

१०० वर्ण ५—कालो, नीलो, रातो, पीलो, धोलो एक एक रंगका भेद २०×५=१०० ।

१०० रस ५—तीखो, कड़वो, कषायलो, खट्टो, मीठो, एक एक का भेद २०×५—१०० ।

४६ गंध २—सुगन्ध, दुर्गन्ध एक एक का भेद २३×२=४६ ।

---

*नोट—इसका विस्तार वीसमा बोलसे जाणना ।

१८४ स्पर्श ८—खरखरो, सुंवालो; भारी, हलको; शीत, उष्ण; चीकणो, लुखो, एक एक का भेद २३×८=१८४।

।विशेष विस्तार से ५३० भेद रूपीका ॥

पांच वर्ण, दोय गन्ध, पांच रस, आठ स्पर्श पांच संठाण ये पचीस बोलमें जितने जितने बोल पावे वो गिननेसे सर्व मिल कर ५३० भेद होते हैं।

पांच वर्ण—१ कालो, २ नीलो, ३ रातो, ४ पीलो, ५ धोलो. एक एक वर्णमें वीस वीस भेद पावे—दोय गन्ध, पांच रस, आठ स्पर्श पांच संठाण. ये वीस पंचा सो।

दोय गन्ध—१ सुगन्ध, २ दुर्गंध एक एक गंधमें तेवीस तेवीस बोल पावे, पांच वर्ण, पांच

रस, आठ स्फर्श, पांच संठाण, ये तेवीस दु छी-यांलीस जाणना।

पांच रस—१ तीखो २ कड़वा ३ कषायलो ४ खाटो, मीठो, एक एक रसमें वीस वीस भेद लाधे, पांच वर्ण. दोय गंध. आठ स्फर्श, पांच संठाण ये वीस पंचा सो।

आठ स्फर्श—१ खरदरो, २ सुंवालो, ३ हल-को, ४ भारी, ५ ठंडो, ६ उनो, ७ लुखो, ८ चोपड्यो, एक एक स्फर्शमें तेवीस तेवीस भेद लाधे, पांच वर्ण, दोय गन्ध, पांच रस, छव स्फर्श, पांच संठाण ये तेवीस अट्ठा एक सो चोरासी ; जहां खरदराकी पूछा हो तो खरदरो और सुंवालो ये दोय वर्जणा; इसी तरह हल-काकी पुछा होय तो; हलको और भारी ये दोय वर्जणा; इसी तरह ठंडाकी पुछा होवे जब ठंडो और उनो ये दोय वर्जणा; इसी तरह चीकणा की पुछा होवे जब चीकणो और लुखो ये दोय

वर्जणा; इस माफिक जिस बोलकी पुछा होय वो तथा उसका प्रतिपक्ष ये दोय वर्जणा ।

इति जीवराशि अजीवराशि का भेद

समाप्त ॥

बावीसमें बोले श्रावकजीका बारह व्रत-

१ पहिला व्रतमें श्रावकजी त्रसजीव हणनेका त्याग करे (हालता चालता जीव विना अपराधे मारे नहीं) और स्थावरकी मर्यादा करे।

२ दूजे व्रतमें श्रावकजी मोटको झूठ बोले नहीं।

३ तीजे व्रतमें श्रावकजी मोटकी चोरी करे नहीं।

४ चोथे व्रतमें श्रावकजी पराई स्त्रीका त्याग करे और आपणी स्त्रीकी मर्यादा करे।

५ पाचमें व्रतमें श्रावकजी परिग्रहकी मर्यादा करे।

६ छट्ठा व्रतमें श्रावकजी छव दिशाकी मर्यादा करे (पूर्व, पच्छिम, उत्तर, दक्षिण, उंची, नीची)।

७ सातमे व्रतमें श्रावकजी छवीस बोलकी मर्यादा करे, और पन्दरह कर्मादानका त्याग करे।

२६ बोलकी मर्यादा करे उनका नाम-

१ उल्लणिया विहं-शरीरपुछणेका अंगोछा ।

२ दंतणविहं-दांतण ।

३ फल विहं-वृक्षका फल ।

४ अभंगण विहं-शरीर-पर चोपड़नेकी या लेप करनेकी वस्तु तेल प्रमुख ।

५ उवट्टण विहं-मर्दन करनेकी वस्तु पीठी प्रमुख।

६ मंज्झण विहं-स्नान करनेका पाणी प्रमुख ।

७ वत्थ विहं-वस्त्र, कपड़ा ।

८ विलेवण विहं-चन्दनादिक ।

९ पुप्फ विहं-फुल ।

१० आभरण विहं-गहणा, दागीना ।

११ धुप विहं-धुप ।

१२-पेज विहं-उकाली दवा वगेरह पीणेकी वस्तु।

१३ भक्खण-विहं-सुंखड़ी बदाम, पिस्ता वगेरह मेवो ।

१४ उदण विहं-चावल [साल] ।

१५ सुप विहं-रांधी हुई दाल ।

१६ विगय विहं-घी, तेल, दूध, दही, मीठो गुड़, खांड, सक्कर, मिश्री वगेरह ।

१७ साग विहं-लीलोत्रींका पता हरा साग ।

१८ माहुर विहं-वेलरा फल ।

१९ जीमण विहं-जो वस्तु जीमणेमें आवें उसकी विधि गिणती ।

२० पाणी विहं-पाणी ।

२१ मुखवास विहं-सुपारी, लोंग इलायची वगेरह मुख साफ करनेकी वस्तु ।

२२ वाहनि विहं पन्नी-पगमें पेरणेकी जीनस पगरखी प्रमुख ।

२३ वाहण विहं-सवारी घोड़ा गाड़ी, उंट वगेरह ।

२४ सयण विहं-सुंणेकी सेजा पिंलग आदि

२५ सचित्त विहं-सचित्त वस्तु खाने आश्री ।

२६ दव्व विहं-पूर्व कही जीके सीवाय दूसरा द्रव्य रह्या सो ।

पन्द्रह कर्मादान का नाम ।

१ ईंगाल कम्मे—कोयला कराय के वेचने का व्यापार करे नहीं, पजावा भट्टीका कर्म करावे नहीं ।

२ वण कम्मे—वनका झाड़ (वृक्ष) कटाणे का ठेका लेने देणेका व्यापारका त्याग करे ।

३ साड़ी कम्मे—गाड़ा, गाड़ी, एका, चरखा, पींजरा वगेरह वनवाकर वेचणे के व्यापार का त्याग करे ।

४ भाड़ी कम्मे—गाड्यां, एका, साइकल, मोटर टेक्सी, ऊंट, वेल वगेरह भाड़े फेरे नहीं तथा घर, हाट हवेली व्यापार के निमित्त भाड़ा कमाणे के वास्ते तथा वेचणे के वास्ते वणावे नहीं; लोहे की, पत्थरकी, लुण आदि की खान खोदावे नहीं ।

५ फोड़ी कम्मे—पृथ्वी का पेट, कूवा, बावड़ी आदि ठेका लेकर फोड़ावे नहीं तथा व्यापार के निमित्त करावे नहीं।

६ दंतवाणिज्झे—हाथी का दांत, उल्लु का नख, मृग का सींग चमड़ा इत्यादिक का व्यापार श्रावक न करे।

७ लक्खवाणिज्झे—लाख, नील, साजी, सोरा, सोहागा, मेनसील इत्यादिक को व्यापार श्रावक न करे।

८ रसवाणिज्झे—रस, मदिरा, घी, मधु (सहत) इत्यादिका व्यापार न करे।

९ विसवाणिज्झे—विष (जहर का अफीम, संखीयो, हरताल, गांजा) का व्यापार श्रावक न करे।

१० केसवाणिज्झे—चंवर, केस प्रमुखको व्यापार श्रावक न करे।

११ जंतपिलणाया कम्मे—तिल, सरसु, अलसी

घाणीमें पिलायकर, तेल निकलायकर, वेचनेका व्यापार करे नहीं। तथा घाण्यां, कल्यांको व्यापार न करे।

१२ निल्लंच्छण कम्मे—टोघड़ा घोड़ा आदि खसी कराय कर वेचणेको व्यापार न करे।

१३ दवग्गि दावणया कम्मे—वनमें, खेतमें आग लगावे नहीं, खेत की वाड फूँकावे नहीं।

१४ सरदह तलाव परिसोसणया कम्मे—सरवर कुण्ड, तलाव को पाणी सुकावे नहीं, ऐसा व्यापार करे नहीं।

१५ असइ जण पोसणया कम्मे—हिंसक जीव श्वान. विल्ली, तीतर, कुकड़ाने आपका आजीविकाके वास्ते पाले नहीं, तथा वेश्यादिकने न पोषे. तथा उनको कुशील अणाचार को पइसो आप न लेवे, हिंसाकारक पाप कारक के साथ लोभरे वस पड़कर व्याजको व्यापार नहीं करे।

८ आठमा व्रतमें श्रावकजी अनर्थदण्डका त्याग करे।

९ नवमा व्रतमें श्रावकजी शुद्ध सामायिक करे (सामायिक को नियम राखे)।

१० दशमा व्रतमें देसावगासिक पोषो करे, संवर करे, चवदे नियम चितारे।

चउदे नियम के नाम।

१ सचित्त—याने कच्चा पाणी, कच्चा दाना, कच्ची हरी (लिलोत्री) वगेरह सचित (जीवयुक्त) अनेक वस्तु समझना, जिसकी गिणति तथा वजन साथ मर्यादा अपनी इच्छा अनुसार करे।

२ द्रव्य—याने जितनी वस्तु अपने मुँहमें लेनेमें आवे सो उनकी गिणती रखकर मर्यादा करे।

३ विगय—याने दूध, दही, घृत, तेल, गुड़

(मीठे) की गिनती तथा वजन साथ म-
र्यादा करे ।

४ पन्नी—याने जुते, तलिये, मौजे, खड़ाउ इ-
त्यादिक पेरमें पहरने की मर्यादा करना
याने गिणती से रखकर उपरायेंतका त्याग
करे, संगटेकी जयणा संगटेरो दोष नहीं।

५ तंम्बोल—याने लोंग, सुपारी, इलायची,
पान, जायफल, जावंत्री वगेरह मुखवासकी
मर्यादा करे ।

६ वत्थ—वस्त्र पहरने, ओढने की मर्यादा
गिणती से करे ।

७ कुसुम--याने फूल, अतर, तेल इत्यादिक
जो सूंघनेमें आवे उसकी मर्यादा करे ।

८ वाहन--याने गाड़ी, रथ, बग्घी, तांगा,
एका, वेली, हाथी, घोड़ा, पालखी, म्याना,
रेलगाड़ी, टेक्सी (मोटर) रिखसा, बाइ-
सीकल, मोटर साइकल, डुंगी, न्याव, बोट,

हवाइजहाज विगेरह तिरती, फिरती, चलती सब प्रकार की सवारी की मर्यादा करे।

(९) सयण—याने गादी, तकिया, गलेचा, छप्परपिलंग, मांचा, खुरसी, मकान वगैरे जो बेठनेके तथा सोनेके लिये काम आवे उसकी मर्यादा करे।

१० विलेपण—याने केसर, कुंकुम, चन्दन, तैल, पीठी, लेप, साबण, सुरमो वगेरे शरीरके विलेपन करनेकी मर्यादा करे।

११ दिशी—याने पूर्व, पश्चिम, दक्षिण, उत्तर, उंची, नीची यह छव दिशीमें जाणेकी मर्यादा करे।

१२ अबंभ--याने कुशील (स्त्री सेवन) की रातकी मर्यादा करे दिनका त्याग करे।

१३ नाहावण--याने स्नान, मज्जन करनेकी मर्यादा करे।

१४ भत्तेसु--याने आहार, पाणी करनेकी मर्यादा करे ।

॥ छवकायके आरम्भकी मर्यादा करे ॥

१ पृथ्वीकाय--याने मुरड, मट्टी, खडी, गैरूं हिरमच, निमक वगेरे सचित्त पृथ्वीकायके आरम्भकी मर्यादा करे ।

२ अप्पकाय--याने सव जातके सचित्त (कच्चा) पाणी पीने तथा वर्तनेकी मर्यादा करे तथा पलींढेकी मर्यादा करे ।

३ तेउकाय--याने अग्निका आरम्भ चुला, भट्टी, चिराग रोसनी हुक्का, वीडी, चीलम, चुरट वगेरेकी मर्यादा करे या त्याग करे ।

४ वाउकाय--याने पंखीसे पंखासे, कपड़ेसे, वीजणींसे पत्ता, वगेरासे हवा लेनेकी मर्यादा करे ।

५ वनस्पति काय-याने हरी, लिलोत्री, फूल, फल, भाजी, साग, तरकारी, छाल, जड़ वगेरे

सचित्त वनस्पति कायकी मर्यादा करे या त्याग करे।

६ त्रसकाय-याने बेइन्द्रिय, तेइंद्रिय, चौरेन्द्रिय, पञ्चेन्द्रिय वगेरह हालता चालता प्राणीने जाणकर मारनेका पच्चक्खाण करे।

तीन प्रकारके व्यापारकी मर्यादा—

१ असी-याने शस्त्र, छुरी, कटारी, चक्कु, ढाल, तलवार, बन्दुक कतरणी कैंची वगेरह शस्त्रोंकी मर्यादा करे गिणतासे उपरायंत का त्याग करे।

२ मसी-याने कलम, फांउनटेन पेन, पेनसल, कागज, पत्र, खत, वही वगेरा लिखनेके सामानकी मर्यादा करे।

३ कसी--याने करसाणीका काम खेत, बगीचा, कुंड, बावडी वगेरे की मर्यादा या त्याग करे।

ये सब मिलकर २३ तेवीस बोल हुवे इन

बोलोंकी मर्यादा श्रावक श्राविकाओंको नि-
त्य प्रति (हमेशा) सुवह करना चाहिये और
पिछा शामको याद करलेना चाहिये, कम-
लागे सो निर्जरा खाते ; ऐसा करनेसे सव
दिनमें राई जितना पाप लगता है, और मेरु
जितना पाप टल जाता है, ऐसी मर्यादा
करनेसे महा फलके लाभकी प्राप्ति होती
है, नरक, तिर्यंच की गति टल जाती है
और सद्गति प्राप्त होती है।

११ इग्यारसें व्रतमें श्रावकजी प्रति पूर्ण पोषो
करे।

१२ बारमा व्रतमें श्रावकजी सुजतो दान देवे
याने सुजता आहार पाणीका लेणेवालाने
असुजतो बेरावे नहीं।

पुनः देशविरति के बारह व्रत निश्चय और
व्यवहार से क्रमशः दिखलाते हैं—

१ प्राणातिपात-विरमण व्रत ।

दूसरे जीव को अपने समान जानकर उसकी रक्षा करनी, उसे दुःख न देना--मारना नहीं, वह व्यवहार से प्राणातिपात-विरमण अर्थात् अहिंसाव्रत है। अपनी आत्मा कर्म के वश होकर दुःखी होती है ऐसा जानकर उसे कर्म बन्धनसे छोड़ाना और आत्म-गुणों की रक्षा कर उनकी वृद्धि करनी यह निश्चय से प्राणातिपातविरमण व्रत कहा जाता है।

२ मृषावाद-विरमण व्रत ।

असत्य-झूठ वचन न बोलना यह व्यवहार से मृषावाद-विरमण व्रत है। कोई भी पौद्गलिक चीज को अपनी कहनी, जीव को अजीव या अजीव को जीव कहना, सिद्धांतों का झूठ अर्थ करना यह सब निश्चय-मृषावाद हैं, इन सबों का त्याग को निश्चयमृषावाद-विरमण व्रत

कहते हैं। अदत्तादान-आदिक व्रतों को तोड़ने से केवल चारित्र का ही भङ्ग होता है परन्तु इस व्रत का खण्डन करने से तो समकित, ज्ञान और चारित्र ये तीनों का नाश होता है। इसी से सिद्धान्त में कहा गया है कि जो साधु चतुर्थव्रत का खण्डन करता है वह प्रायश्चित्त लेकर शुद्ध हो सकता है, लेकिन जो साधु सिद्धान्त-सूत्रों के अर्थ का मृषा उपदेश देकर इस व्रत को तोड़ता है उसकी शुद्धि अलोचना-प्रायश्चित्त से भी नहीं हो सकती। कारण यह है कि जो अन्य व्रतों का खण्डन करता है उससे केवल अपनी ही आत्मा को मलिन करता है, किन्तु जो सिद्धांतों का मृषा-उपदेश देता है वह दूसरे जीवों की आत्मा को भी मलिन करता है। इस लिये भव्यप्राणियों को उचित है कि वे ऐसे मिथ्यो-पदेश देनेवाले, जो इस दुःषम काल में दुःख गर्भित या मोह-गर्भित वैराग्य को प्राप्त कर

तृष्णा-नदी में बहते हुए नजर आते हैं, उसके सङ्ग से अपने को बचावें।

३ अदत्तादान-विरमण व्रत।

परकीय चीज को उसके मालिक की बिना आज्ञा लेना—अर्थात् चोरी, धूर्तता, बदमासी या चालाकी से दूसरे की चीज का ग्रहण करना अदत्तादान है और उसके त्याग को व्यवहार से अदत्तादान-विरमण व्रत कहते हैं। निश्चय से अदत्तादान-विरमण व्रत यह होता है कि पांचों इन्द्रियों के तेईस विषयों, आठ कर्मों की वर्गणायें आदि पर-आत्म-भिन्न वस्तुओं के ग्रहण करने की इच्छा तक न करनी। यहां पर कोई प्रश्न कर सकता है कि इंद्रियों के विषयों की और कर्मों को ग्रहण करने की इच्छा करता ही कौन है? इसका उत्तर यह है कि जो पुरुष वीतराग प्रभुके वचनों को ठीक ठीक नहीं समझता और पुण्य के हेतु-भूत शुभ-क्रियायें करता

रहता है, आत्म-स्वरूप को बिना जाने पुण्य की इच्छा प्रायः बहुत लोगों को हुआ करती है, और वे पुण्य कर्म में, जिस के ४२ भेद हैं, शीघ्र प्रवृत्ति भी करते हैं, यह पुण्य की इच्छा करना ही निश्चय अदत्तादान है। इसके त्याग को अर्थात् निष्काम-धर्म को, निश्चय से अदत्तादान विरमण व्रत कहते हैं।

४ मैथुन-विरमण व्रत।

दूसरे की स्त्री का त्याग करना पुरुष के लिये, और पर-पुरुष का त्याग करना स्त्री के लिये मैथुन विरमण व्रत है। साधु को सर्वथा स्त्री का त्याग होता है और गृहस्थ को अपनी स्त्री को छोड़कर अन्य स्त्री का। इस त्याग को व्यवहार से मैथुन-विरमण व्रत कहते हैं। और विषयों के अभिलाषों का—तृष्णा का त्याग करना, निश्चय से मैथुन-विरमण व्रत कह-लाता है। आत्मा स्वगुण ज्ञान-आदिक का

भोगी है, न कि पर वस्तु पौद्गलिक वर्णादिक का। पुद्गल-स्कंध अनंत जीवों की ऐंठ है, ऐसे निश्चय-ज्ञान से अन्तरङ्गलोलुपता का त्याग न होकर केवल बाह्य विषयों के ही त्याग करने पर भी मैथुन कर्म लगते हैं।

५ परिग्रह परिणाम व्रत।

धन, धान्य, दास, दासी, चतुष्पद पशु घर, ज़मीन, वस्त्र और आभरण के संग्रह को परिग्रह कहते हैं। साधु के लिये इन सब चीजों का सर्वथा त्याग होता है और गृहस्थों को इन चीजों का इच्छा-परिमाण होता है अर्थात् जिस की जितनी इच्छा हो उससे ज्यादा का त्याग होता है। उस त्याग को व्यवहार-परिग्रहपरिमाण व्रत कहते हैं। राग, द्वेष, अज्ञान, ज्ञानावरणीय आदि आठों कर्म, शरीर, इन्द्रियां आदि आत्म-भिन्न वस्तु को पराई जानकर छोड़ना-

अर्थात् परवस्तु में मूर्च्छा-ममता का त्याग करना-यह निश्चय परिग्रह परिमाण व्रत है।

६ दिशा-परिणाम व्रत ।

पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण, उर्ध्व और अधः (नीचे) कि दिशाओं में गमन-आगमन के लिये अमुक हद बांधकर बाकी का त्याग करना-जैसा कि पूर्व दिशा में सो कोश तक मैं गमन आगमन करूंगा, इससे आगे नहीं-इसको व्यवहार दिशा-परिमाण व्रत कहते हैं। चारों गति में भ्रमण करना यह कर्मों का फल है, ऐसा जान कर उससे उदासीन होना और सिद्ध-अवस्था की उपादेयता स्वीकारना, निश्चय दिशा-परिमाण व्रत कहलाता है।

७ भोग-उपभोग-परिमाण व्रत ।

भोजन आदि जो एक ही वार भोगने में आते हैं उनको भोग, और वस्त्र वगैरः जो अनेक

वार उपभोग में आते हैं उन्हें उपभोग कहते हैं, उनका परिमाण करना अर्थात् इच्छा के अनुसार छूट रखकर बाकी का त्याग करना यह व्यवहार से भोग उपभोग परिमाण व्रत कहलाता है। यद्यपि व्यवहार से कर्मों का कर्ता और भोक्ता जीव है, तथापि निश्चय से कर्ता और भोक्ता कर्म ही हैं, परन्तु आत्मा अज्ञानवश अनादि से परभावों का भोगी होता हुआ पर वस्तुओं का ग्राहक और रक्षक भी हुआ अर्थात् आत्मा की ज्ञायकता, ग्राहकता, भोजकता और रक्षकता बिगड़ने से उसकी कर्तृता भी बिगड़ी। यही कारण है कि वह पर-भाव-रङ्गी होता हुआ आठों कर्मों का भी कर्ता हुआ है, किन्तु वास्तव में वह अपने स्वभाव का ही कर्ता है, परंतु उपकरणों के आवृत होने से वह स्वकार्य नहीं कर सकता है, और विभावों को कर्ता है, अज्ञानवश जीव को उपयोग मिला है, परंतु वह भिन्न है।

आत्मा ही जिन गुणों का कर्ता और भोक्ता है ऐसे स्वरूपानुपारागो परिणाम को निश्चय से भोगोपभोग-परिमाण व्रत कहते हैं।

८ अनर्थदण्ड—विरमण व्रत।

विना ही प्रयोजन के अपने को पाप-कार्यों में लगाना -हिंसादि करना-अनर्थदण्ड है। जैसे कोई आदमी हाथ में छड़ी लेकर सैर करने को बगीचा में जाता है, चलते चलते अपनी लड़की को घुमाता हुआ वृक्ष को पत्ती को विना ही प्रयोजन तोड़ता है, जिससे पत्ती के जीवों को तो दुःख यावत् मरण होता है और इससे उस आदमी का कुछ भी काम नहीं निकलता। ऐसे व्यर्थ पापों को छोड़ना व्यवहार अनर्थदण्ड-विरमण व्रत है। जीव मिथ्यात्व, अविरति, कषाय, योग आदि से शुभाशुभ कर्मों का बन्ध करता है जो कि सुख दुःख का कारण होता है, उन

कर्मों के कारणों से अपने को बचाना ही निश्चय से अनर्थदण्ड विरमण व्रत है।

९ सामायिक व्रत।

मन, वचन और काया के आरम्भों को छोड़कर एकांत में नियमानुसार बैठना या पुस्तकादि पढ़ना अथवा जप करना व्यवहार सामायिक है। अपने ज्ञान, दर्शन और चारित्र गुण की विचारणा करना और सर्व जीवों की सत्ता एक समान जानकर सर्व जीवों के साथ समभाव रखना निश्चय सामायिक व्रत है।

१० देशावकाशिक व्रत।

मन, वचन और काया के योगों को दूरकर एक स्थान में बैठकर धर्म ध्यान करना व्यवहार देशावकाशिक व्रत है। श्रुतज्ञान से छओं द्रव्यों को जानकर पांच द्रव्यों का त्यागकर ज्ञानवंत जीव का ही ध्यान करना निश्चय-देशावकाशिक व्रत है।

११ पौषध व्रत ।

चार या आठ प्रहर तक सब सावद्य कर्मों का त्याग कर समता परिणाम से स्वाध्याय में प्रवृत्ति करना व्यवहार पौषध और अपने आत्मा को ज्ञान-ध्यान से पुष्ट करना निश्चय पौषध व्रत कहलाता है ।

१२ अतिथिसंविभाग व्रत।

पौषध के पारने के समाप्ति के समय या सर्वदा साधु को या साधर्मिकभाई को यथाशक्ति भोजनादि दान देना व्यवहार से अतिथिसंविभाग व्रत है । स्वजीव को, शिष्य को या गृहस्थ को ज्ञान देना पढ़ाना, सिद्धांतों का श्रवण करना और कराना निश्चय से अतिथिसंविभाग व्रत है ।

ये बारह व्रत कहे गये । जो जीव इन व्रतों को समकित के साथ निश्चय और व्यवहार से

धारण करे, उस जीवको पंचम गुणस्थानक का अधिकारी या देशविरति श्रावक कहते हैं। देश अर्थात् अंश से विरति-त्याग देश-विरति का अर्थ है। सर्व प्रकार के त्याग को सर्व-विरति कहते हैं। यह सर्व-विरति साधु को होती है। साधु के पांच महाव्रतों में इन बारह व्रतोंका समावेश हो जाता है। व्यवहार और निश्चय से पूर्वोक्त व्रतोंका पालन करना और ज्ञान ध्यान संवर तथा निर्जरा में आत्म-परिणाम को स्थिर करना ही निश्चय-चारित्र है। इस निश्चय-चारित्रके दो मार्ग हैं—१ उत्सर्ग २ अपवाद। उत्कृष्ट तीक्ष्ण परिणाम का रहना उत्सर्ग मार्ग है और उस उत्सर्ग को मजबूत करने के लिये जो कारणों या निमित्तों की सेवना की जाय वह अपवाद-मार्ग है। कहा है किः—

"संथरणम्मि असुद्धं, दुण्हवि गिण्हंत-देतयाण हिअं आउर-दिट्ठंतेणं, तं चेवहियं असंथरणे॥"

अर्थात जब तक साधक-भावको बाधा न पहुंचे तब तक निषेध का सेवन न करना चाहिये और साधक-परिणाम न रह सकता हो तब निषेध का आचरण करे । आत्मा-गुण की दृढ़ता के लिये जो किया जाय वह अपवाद मार्ग है ।

तेवीसमें बोले साधुजीका पांच महाव्रत

१ पहेला महाव्रतमें साधुजी महाराज सर्वथा प्रकारे जीव की हिंसा करे नहीं; करावे नहीं करतांने भलो जाणे नही; मन वचन काया करी; तीन करण, तीन जोगसे ।

२ दूसरा महाव्रतमें साधुजी महाराज सर्वथा-प्रकारे झूठ बोले नहीं, बोलावे नहीं, बोलतांने भलो जाणे नहीं ; मन, वचन काया करी तीन करण तीन जोगसे ।

३ तीसरा महाव्रतमें साधुजी महाराज सर्वथा -प्रकारे चोरी करे नहीं करावे नहीं; करता ने

भलो जाणे नहीं ; मन वचन काया करी; तीन करण तीन जोगसे ।

४ चोथा महाव्रत में साधुजी महाराज सर्वथा प्रकारे मैथुन सेवे नहीं; सेवावे नहीं; सेवता ने भलो जाणे नहीं; मन वचन काया करी; तीन करण; तीन जोगसे ।

५ पांचवां महाव्रतमें साधुजी महाराज सर्वथा प्रकारे परिग्रह राखे नहीं रखावे नहीं; राखताने भलो जाणे नहीं; मन वचन काया करी; तीन करण, तीन जोगसे ।

चोवीसमें बोलें भांगा ४६ को जाण पणो;---

आंक	११	१२	१३	२१	२२	२३	३१	३२	३३
भांगा	६	६	३	६	६	३	३	३	१
करण	१	१	१	२	२	२	३	३	३
जोग	१	२	३	१	२	३	१	२	३

भांगो ६ वाँ १८ वाँ २१ वाँ ३० वाँ ३६ वाँ ४२ वाँ ४५ वाँ ४८ वाँ ४६ वाँ तक ।

११ आंक एक इग्यारह को-भांगा उपजे नव

एक करण एक जोग सुं कहेणा-१ करूं नहीं मनसा, २ करुं नहीं वायसा, ३ करुं नहीं कायसा ४ कराउं नहीं मनसा, ५ कराउं नहीं वायसा, ६ कराउं नहीं कायसा, ७ अणुमोदुं नहीं मनसा, ८ अणुमोदुं नहीं वायसा, ६ अणुमोदुं नहीं कायसा।

१२ आंक एक वारहको-भांगा उपजे नव; एक करण दोय जोग सें कहणा-१ करूं नहीं मनसा कायसा,२ करुं नहीं मनसा कायसा, ३ करूं नहीं वायसा कायसा, ४ कराउं नहीं मनसा वायसा, ५ कराउं नहीं मनसा कायसा,६ कराउं नहीं वायसा कायसा, ७ अणुमोदुं नहीं मनसा वायसा, ८ अणुमोदुं नहीं मनसा कायसा, ६ अ-णुमोदुं नहीं वायसा कायसा।

१३ आंक एक तेरह को-भांगा उपजे तीन एक करण तीन जोग से कहेणा-१ करुं नहीं मनसा वायसा कायसा, २ कराउं नहीं मनसा

वायसा कायसा, ३ अणमोदुं नहीं मनसा वायसा कायसा।

२१ आंक एक इकवीसको भांगा उपजे नव, दोय करण एक जोगसे कहेणा—१ करुं नहीं कराउं नहीं मनसा, २ करुं नहीं कराउं नहीं वायसा, ३ करुं नहीं कराउं नहीं कायसा, ४ करुं नहीं अणुमोदुं नहीं मनसा ;५ करुं नहीं अणु-मोदुं नहीं वायसा, ६ करूं नहीं अणमोदुं नहीं कायसा, ७ कराउं नहीं अणुमोदुं नहीं मनसा, ८ कराउं नहीं अणुमोदुं नहीं वायसा, ९ कराउं नहीं अणुमोदुं नहीं कायसा।

(२२) आंक एक बावीस को-भांगा उपजे नव ; दोय करण दोय जोगसे कहेणा-१ करूं नहीं कराउं नहीं मनसा वायसा, २ करूं नहीं कराउं नहीं मनसा कायसा, ३ करूं नहीं कराउं नहीं वायसा कायसा, ४ करूं नहीं अणुमोदुं नहीं मनसा वायसा, ५ करूं नहीं अणुमोदुं

नहीं मनसा कायसा, ६ करूं नहीं अणुमोदुं नहीं वायसा कायसा, ७ कराउं नहीं अणुमोदुं नहीं मनसा वायसा, ८ कराउं नहीं अणुमोदुं नहीं मनसा कायसा, ९ कराउं नहीं अणुमोदुं नहीं वायसा कायसा।

२३ आंक एक तेवीस को-भांगा उपजे तीन, दोय करण तीन जोगसे कहेणा-१ करूं नहीं कराउं नहीं मनसा वायसा कायसा, २ करूं नहीं अणुमोदुं नहीं मनसा वायसा कायसा, ३ कराउं नहीं अणुमोदुं नहीं मनसा वायसा कायसा।

३१ आंक एक एकतीस को-भांगा ऊपजे तीन; तीन करण एक जोगसे कहेणा-१ करुं नहीं कराउं नहीं अणुमोदुं नहीं मनसा, २ करूं नहीं कराउं नहीं अणुमोदुं नहीं वायसा, ३ करूं नहीं कराउं नहीं अणुमोदुं नहीं कायसा।

३२ आंक एक बत्तीस को-भांगा उपजे तीन,

तीन करण दोय जोगसे कहेणा-१ करुं नहीं कराउं नहीं अणुमोदुं नहीं मनसा वायसा; २ करुं नहीं कराउं नहीं अणुमोदुं नहीं मनसा कायसा; ३ करुं नहीं कराउं नहीं अणुमोदुं नहीं वायसा कायसा ।

३३ आंक एक तेत्रीस को-भांगो उपजे एक, तीन करण; तीन जोगसे कहेणा-१ करुं नहीं कराउं नहीं अणुमोदुं नहीं मनसा वायसा कायसा ।

१-११ का (१) करण १ योग से कहना चाहिए और भङ्ग ९ होते हैं। जैसेकि करूं नहीं मनसा १, करूं नहीं वयसा २, करुं नहीं कायसा ३, कराऊं नहीं मनसा ४, कराऊं नहीं वयसा ५, कराऊं नहीं कायसा ६, अनुमोदूं नहीं मनसा ७, अनुमोदूं नहीं वयसा ८, अनुमोदूं नहीं कायसा ९ ।

इन नव भाङ्गों की ८१ सेरियें (रथ्या)

(भेद) होती हैं; जिस में प्रत्याख्यान करने वाले की नव सेरी बन्ध होजाती है। ७२ खुली रहती हैं इस का बोध यन्त्र से कीजिये।

करूं नहीं मनसा	...	१	०	०	०	०	०	०	०	०
करूं नहीं वयसा	.	०	१	०	०	०	०	०	०	०
करूं नहीं कायसा	.	०	०	१	०	०	०	०	०	०
कराऊं नहीं मनसा	..	०	०	०	१	०	०	०	०	०
कराऊं नहीं वयसा	.	०	०	०	०	१	०	०	०	०
कराऊ नहीं कायसा	...	०	०	०	०	०	१	०	०	०
अनुमोदूं नहीं मनसा	...	०	०	०	०	०	०	१	०	०
अनुमोदूं नहीं वयसा	..	०	०	०		०	०	०	१	०
अनुमोदूं नहीं कायसा		०	०	०	०	०	०	०	०	१

प्रत्येक २ भाङ्गे में एक सेरी बन्ध होती है, आठ सेरीयें खुली रहती हैं और सर्व ८१ सेरियों में नव तो रुक जाती हैं, ७२ खुली रहती हैं, अपितु जो नव सेरीयें रुक जाती हैं वे यह हैं:—

१ । ११ । २१ । ३१ । ४१ । ५१ । ६१ । ७१ । ८१ ॥ खुली ७२ जैसेकि-२ । ३ । ४ । ५ । ६ । ७ । ८ । ९ । १० । ० । १२ । १३ । १४ । १५ । १६ । १७ । १८ । १९ । २० । ० । २२ । २३ । २४ । २५ । २६ । २७ । २८ । २९ । ३० । ० । ३२ । ३३ । ३४ । ३५ । ३६ । ३७ । ३८ । ३९ । ४० । ० । ४२ । ४३ । ४४ । ४५ । ४६ । ४७ । ४८ । ४९ । ५० । ० । ५२ । ५३ । ५४ । ५५ । ५६ । ५७ । ५८ । ५९ । ६० । ० । ६२ । ६३ । ६४ । ६५ । ६६ । ६७ । ६८ । ६९ । ७० । ० । ७२ । ७३ । ७४ । ७५ । ७६ । ७७ । ७८ । ७९।८०।०। इस प्रकार ७२ सेरी खुली रहती है। ९—नव रुक जाती हैं। पृष्ठ १४४ के यंत्र में देखो

यह एकादश अङ्क का विवर्ण किया गया।

१२ अङ्क के भाङ्गों की ६ सेरी होती हैं अपितु सर्व सेरीयें ८१ हैं, उन में १ भङ्ग की ६ सेरी, उनमें २ रुकी खुली ७, सर्व भाङ्गों की सेरी रुकी १८ खुली ६३।

रुकी सेरी यह हैं यथा—१।२।१०।१२।२०।२१।३१।३२। ४०।४२।५०।५१।६१।६२।७०।७२।८०।८१। एवं १८।

शेष ६३ खुली वे यह हैं ००।३।४।५।६।७।८।९।०।११।०।१३।१४।१५।१६।१७।१८।१९।००।२२।२३।२४।२५।२६।२७।२८।२९।३०।००।३३।३४।३५।३६।३७।३८।३९।०।४१।०।४३।४४।४५।४६।४७।४८।४९।००।५२।५३।५४।५५।५६।५७।५८।५९।६०।००।६३।६४।६५।६६।६७।६८।६९।०।७१।०।७३।७४।७५।७६।७७।७८।७९।००। यह सर्व ६३ हुई।

करूं नहीं मनसा वयसा	१	१	०	०	०	०	०	०	०
करूं नहीं मनसा कायसा	१	०	१	०	०	०	०	०	०
करूं नहीं वयसा कायसा	०	१	१	०	०	०	०	०	०
कराऊं नहीं मनसा वयसा	०	०	०	१	१	०	०	०	०
कराऊं नहीं मनसा कायसा	०	०	०	१	०	१	०	०	०
कराऊं नहीं वयसा कायसा	०	०	०	०	१	१	०	०	०
अनुमोदूं नहीं मनसा वयसा	०	०	०	०	०	०	१	१	०
अनुमोदूं नहीं मनसा कायसा	०	०	०	०	०	०	१	०	१
अनुमोदूं नहीं वयसा कायसा	०	०	०	०	०	०	०	१	१

किन्तु द्वादशवें अङ्क का विवर्ण पूर्ण हुआ है अपितु नव भाङ्गे इस प्रकार उच्चारने चाहिये। यथा—

अङ्क १२ का भाङ्गे ६-१ करण २ योग से कहने चाहिए, करूं नहीं मनसा वयसा १, करूं नहीं मनसा कायसा २, करूं नहीं वयसा कायसा ३, कराऊं नहीं मनसा वयसा ४, कराऊं नहीं मनसा कायसा ५, कराऊं नहीं वयसा कायसा ६, अनुमोदूं नहीं मनसा वयसा ७, अनुमोदूं नहीं मनसा कायसा ८, अनुमोदूं नहीं वयसा कायसा ९। एवं ६॥

३-अङ्क एक १३ का भाङ्गे ३—एक १ करण ३ योग से कहना चाहिए। करूं नहीं मनसा वयसा कायसा १, कराऊं नहीं मनसा वयसा कायसा २, अनुमोदूं नहीं मनसा वयसा कायसा ३, एवं ३, भांगे त्रयोदशव अङ्कों के भाङ्गों की २७ सेरीयें [मार्ग] हैं जिस में नव

तो रुक जाती है १८ खुली रहती हैं और एक भाङ्गे में तीन सेरीयें रुकती है ६ खुली रहती हैं जैसे कि—

१ । २ । ३ । १३ । १४ । १५ । २५ ।२६। २७ । एवं ६ रुकी । खुली सेरी १८ हैं जैसेकि—

० । ० । ० । ४ । ५ । ६ । ७ । ८ । ६ । १० । ११ ।१२ । ० । ० । ० । १६ । १७ । १८ । १६ । २० । २१ । २२ । २३ । २४ । ० । ० । ० ॥

यह सर्व १९ सेरी खुली रहती हैं इस प्रकार त्रयोदशवें अङ्क का विवर्ण पूर्ण हुआ और यह सर्व विवर्ण यन्त्र से देखिये ।

करण १	योग ३	से १	से २	से ३	से ४	से ५	से ६	से ७	से ८	से ९
करूं नहीं	मनसा वयसा कायसा	१	१	१	०	०	०	०	०	०
कराऊं नहीं	मनसा वयसा कायसा	०	०	०	१	१	१	०	०	०
अनुमोदूं नहीं	मनसा वयसा कायसा	०	०	०	०	०	०	१	१	१

४—अङ्क एक २१ का भाङ्गे ६-दो करण एक योगसे कहने चाहिए जैसेकि करूं नहीं कराऊं नहीं मनसा १, करूं नहीं कराऊं नहीं वयसा २, करूं नहीं कराऊं नहीं कायसा ३, करूं नहीं अनुमोदूं नहीं मनसा ४, करूं नहीं अनुमोदूं नहीं वयसा ५, करूं नहीं अनुमोदूं नहीं कायसा ६, कराऊं नहीं अनुमोदूं नहीं मनसा ७, कराऊं नही अनुमोदूं नहीं वयसा ८, कराऊं नहीं अनुमोदूं नहीं कायसा ६ ॥ एवं ६ ॥

एकविंशति के अङ्क के ६ भङ्ग हैं, ८१ सेरीयें हैं जिसमें एक भाङ्गे की ६ सेरीयों में २ रुक जाती हैं, ७ खुली रहती हैं, सर्व भङ्गों की १८ सेरी रुक जाती हैं ६३ खुली रहती हैं जिस में १८ रुकी सेरीयें यह हैं—

१ । ४ । ११ । १४ । २१ । २४ । २८ । ३४ । ३८ । ४४ । ४८ । ५४ । ५८ । ६१ । ६८ । ७१ । ७८ । ८१ । एवं १८ ।

खुली सेरीये ६३ यह हैं—

०।२।३।०।५।६।७।८।९।१०। ०।१२।१३।
०। १५।१६।१७।१८।१९।२०।०।।२२। २३।०।
२५।२६।२७।०। २९।३०। ३१।३२। ३३।०। ३५।
३६।३७।०।३९।४०। ४१।४२। ४३।०।४५। ४६।
४७।०।४९।५०।५१।५२।५३।०।५५।५६।५७।०।
५९।६०।०।६२।६३। ६४।६५।६६। ६७।०। ६९।
७०।०।७२।७३।७४।७५।७६।७७।०।७९।८०।०॥

एवं ६३। यह सर्व विवर्ण यन्त्र से देखिये॥

करूं नहीं कराऊं नहीं	मनसा	१	०	०	१	०	०	०	०	०
करूं नहीं कराऊं नहीं	वयसा	०	१	०	०	१	०	०	०	०
करूं नहीं कराऊं नहीं	कायसा	०	०	१	०	०	१	०	०	०
करूं नहीं अनुमोदूं नहीं	मनसा	१	०	०	०	०	०	१	०	०
करूं नहीं अनुमोदूं नहीं	वयसा	०	१	०	०	०	०	०	१	०
करूं नहीं अनुमोदूं नहीं	कायसा	०	०	१	०	०	०	०	०	१
कराऊं नहीं अनुमोदूं नहीं	मनसा	०	०	०	१	०	०	१	०	०
कराऊं नहीं अनुमोदूं नहीं	वयसा	०	०	०	०	१	०	०	१	०
कराऊं नहीं अनुमोदूं नहीं	कायसा	०	०	०	०	०	१	०	०	१

इस प्रकार २१ वें अङ्क के भाङ्गों का विवर्ण पूर्ण हुआ।

५—अङ्क एक २२ का भाङ्गे ९। दो करण दो योग से कहने चाहिए। करूं नहीं कराउं नहीं मनसा वयसा १, करूं नहीं कराउं नहीं मनसा कायसा २, करूं नहीं कराऊं नहीं वयसा कायसा ३, करूं नहीं अनुमोदूं नहीं मनसा वयसा ४, करूं नहीं अनुमोदूं नहीं मनसा कायसा ५, करूं नहीं अनुमोदूं नहीं वयसा कायसा ६, कराऊं नहीं अनुमोदूं नहीं मनसा वयसा ७, कराऊं नहीं अनुमोदूं नहीं मनसा कायसा ८, कराऊं नहीं अनुमोदूं नहीं वयसा कायसा ९। एवं॥

२२ वें अङ्क के ९ भङ्ग—नव सेरी हैं। सर्वसेरीयें ८१ हैं, किन्तु एक भङ्ग की नव सेरीयों में से ४ रुकी और ५ खुली रहती हैं इस गणना के अनुसार नव भाङ्गों की ३६ सेरीयें रुक जाती हैं, ४५ खुली रहती हैं। अतः ३६ रुकी सेरीयें यह हैं--

१ । २ । ४ । ५ । १० । १२ ।१३। १५ ।२०। २१ । २३ । २४ । २८ । २९ । ३४ । ३५ । ३७ । ३९ । ४३ । ४५ । ४७ । ४८ । ५३ । ५४ । ५८ । ५९ । ६१ । ६२ । ६७ । ६९ । ७० ।। ७२ । ७७ । ७८ । ८० । ८१ । इस प्रकार यह ३६ सेरीयें रुकी हैं और ४५ खुली सेरीयें निम्न लिखितानुसार हैं।

० । ० । ३ । ० । ० । ६ । ७ । ८ । ९ । ० । ११ । ० । ० । १४ । ० । १६ । १७ । १८ । १९ । ० । ० । २२ । ० । ० । २५ । २६ । २७ । ०० । ०० । ३० । ३१ । ३२ । ३३ । ० । ० । ३६ । ० । ३८ । ० । ४० । ४१ । ४२ । ० । ४४ । ० । ४६ । ० । ० । ४९ । ५० । ५१ । ५२ । ० । ० । ५५ । ५६ । ५७ । ० । ० । ६० । ० । ० । ६३ । ६४ । ६५ । ६६ । ० । ६८ । ०।० । ७१ । ० । ७३ । ७४ । ७५ । ७६ । ० ० । ७९ । ०० ॥ एवं ४५ खुली सेरियें हैं और —इसका विवर्ण यन्त्र से देखो—

करूं नहीं कराऊं नहीं	मनसा वय	१	१	०	१	१	०	०	०	०
करूं नहीं कराऊं नहीं	मनसा काय	१	०	१	१	०	१	०	०	०
करूं नहीं कराऊं नहीं	वयसा काय	०	१	१	०	१	१	०	०	०
करूं नहीं अनुमोदूं नहीं	मनसा वय	१	१	०	०	०	०	१	१	०
करूं नहीं अनुमोदूं नहीं	मनसा काय	१	०	१	०	०	०	१	०	१
करूं नहीं अनुमोदूं नहीं	वयसा काय	०	१	१	०	०	०	०	१	१
कराऊं नहीं अनुमोदूं नहीं	मनसा वय	०	०	०	१	१	०	१	१	०
कराऊं नहीं अनुमोदूं नहीं	मनसा काय	०	०	०	१	०	१	१	०	१
कराऊं नहीं अनुमोदूं नहीं	वयसा काय	०	०	०	०	१	१	०	१	१

इस प्रकार २२ वें अङ्क का विवर्ण पूर्ण हुआ।

९-अङ्क एक २३ का दो करण ३ योग से कहना चाहिए। करूं नहीं कराऊं नहीं मनसा वयसा कायसा १, करूं नही अनुमोदूं नहीं मनसा वयसा कायसा २, कराऊं नहीं अनुमोदूं नहीं मनसा वयसा कायसा ३

२३ वें अङ्क के ३ भाङ्गे हैं सेरीयें नव [९] हैं। सर्व सेरीयें २७ हैं एक भाङ्गे की सेरीयें ९ हैं उन में ६ रुकी हैं ३ खुली हैं, सर्व भाङ्गों की १८ सेरीयें रुकी हैं, ९ खुली हैं।

रुकी हुई सेरीयें १८ यह हैं-

१ । २ । ३ । ४ । ५ । ६ । १० । ११ । १२ । १६ । १७ । १८ । २२ । २३ । २४ । २५ । २६ । २७ । एवं १८ ॥ और खुली सेरीयें ९ यह हैं-

० । ० । ० । ० । ० । ० । ७ । ८ । ९ । ० । ० । ० । १३ । १४ । १५ । ० । ० । ० । १९ । २० । २१ । ० । ० । ० । ० । ० । ० ।

एवं ९ सेरियें खुली हैं। देखो यन्त्रमें पूर्ण प्रकारसे।

दो करण	तीनयोग	से १	से २	से ३	से ४	से ५	से ६	से ७	से ८	से ९
करूं नहीं कराऊं नहीं	मनसा वयसा कायसा	१	१	१	१	१	१	०	०	०
करूं नहीं अनुमोदूं नहीं	मनसा वयसा कायसा	१	१	१	०	०	०	१	१	१
कराऊं नहीं अनुमोदूं नहीं	मनसा वयसा कायसा	०	०	०	१	१	१	१	१	१

इस प्रकार २३ वें अंक का विवरण पूर्ण हुआ।

७—अङ्क एक ३१ का भाङ्ग-३। तीन करण एक योग से कहना। करूं नहीं कराऊं नहीं अनुमोदूं नहीं मनसा १, करूं नहीं कराऊं नहीं अनुमोदूं नहीं वयसा २, करूं नहीं कराऊं नहीं अनुमोदूं नहीं कायसा ३। एवं ३॥

३१ वें अङ्क के ३ भङ्ग हैं सर्व सेरीयें २७ हैं एक भङ्ग की ६ सेरीयें हैं उन्हों में रुकी हुई सेरी ३ हैं, खुली सेरीयें ६ हैं, सर्व भङ्गों की रुकी हुई सेरीयें ६ हैं। खुली सेरीयें १८ हैं। अपितु रुकी हुई सेरीयें नव ६ यह हैं। यथा—

१।४।७।११।१४।१७।२१।२४। २७। एवं ६॥ खुली सेरी १८ यह हैं—

०।२।३।०।५।६।०।८।६।१०। ०।१२।१३।०।१५।१६।०।१८।१६। २०।०।२२।२३।०।२५।२६।०। एवं १८ खुली सेरीयें हैं॥ देखो यन्त्र में पूर्ण विस्तार से

करण ३	योग १	से. १	से. २	से. ३	से. ४	से. ५	से. ६	से. ७	से. ८	से. ९
करूं नहीं कराऊं नहीं अनुमोदूं नहीं	मनसा	१	०	०	१	०	०	१	०	०
करूं नहीं कराऊं नहीं अनुमोदूं नहीं	वयसा	०	१	०	०	१	०	०	१	०
करूं नहीं कराऊं नहीं अनुमोदूं नहीं	कायसा	०	०	१	०	०	१	०	०	१

इस प्रकार ३१ वें अङ्क का विवर्ण पूर्ण हो गया है।

८—अङ्क १।३२ का भाङ्ग-३। तीन करण दो २ योग से कहना चाहिए। करूं नही कराऊं नहीं अनुमोदूं नहीं मनसा वयसा १, करूं नही कराऊं नहीं अनुमोदूं नहीं मनसा कायसा २, करूं नहीं कराऊं नही अनुमोदूं नही वयसा कायसा ३। एवं ३॥

३२ वे अङ्क के तीन भङ्ग हैं सेरीयें २७ है अपितु एक भांगेकी सेरीयें नव हैं उनमें ६ रुकी हुई हैं सर्व भङ्गों की १८ रुकी है ९ खुली है अतः रुकी हुई १८ सेरीयें यह हैं—

१।२।४।५।७।८।१०।१२।१३। १५।१६।१८।२०।२१ २३।२४।२६। २७। एवं १८॥ खुली सेरीये ९ यह हैं-

००।३। ०० ।६।००।९।०।११। ००। १४ ।०।१७।०।१९।००/२२। ००।२५।००। यह नव सेरीयें खुली हैं।

इसको यन्त्र में विस्तार से देखो।

करण ३	योग २	से. १	से. २	से. ३	से. ४	से. ५	से. ६	से. ७	से. ८	से. ९
करूं नहीं कराऊं नहीं अनुमोदूं नहीं	मनसा वयसा	१	१	०	१	१	०	१	१	०
करूं नहीं कराऊं नहीं अनुमोदूं नहीं	मनसा कायसा	१	०	१	१	०	१	१	०	१
करूं नहीं कराऊं नहीं अनुमोदूं नहीं	वयसा कायसा	०	१	१	०	१	१	०	१	१

इस प्रकार ३२ वें अङ्क का विवर्ण पूर्ण हुआ।

६—अङ्क ३३ का भङ्ग-१। तीन करण तीन योग से कहना चाहिए। करूं नहीं कराऊं नहीं अनुमोदुं नहीं मनसा वयसा कायसा। एवं १॥

३३ वें अङ्क का भङ्ग एक ही है सेरीये ६ हैं; सब ही रुकी हुई हैं. खुली कोइ भी नहीं है जैसे कि—

१ । २ । ३ । ४ । ५ । ६ । ७ । ८ । ६ ।

इन्हीं में खुली सेरी कोई भी नहीं है

देखो यन्त्र में

करण ३	योग ३	से १	से २	से ३	से ४	से ५	से ६	से ७	से ८	से ९
करू नहीं कराऊ नहीं अनुमोदूं नहीं	मनसा वयसा कायसा	१	१	१	१	१	१	१	१	१

पच्चीसमें बोले चारित्र पांच-चारित्र किसको कहते हैं? बाह्य और आभ्यन्तर क्रियाके निरोध-से प्रादुर्भुत आत्माकी शुद्धि विशेषको चारित्र कहते हैं; चारित्र पांच हैं उनके नाम-१ सामा-यिक चारित्र. २ छेदोपस्थानिक चारित्र, ३ परिहार-विशुद्ध चारित्र, ४ सुक्ष्मसंपराय चारित्र, ५ यथा-ख्यात चारित्र।

पच्चीस बोलकी अल्पाबहुत्व।

सबसे थोड़े २३ तेवीसवें २५ पच्चीसवें बोल वाला। तेथकी २२ वावीसवे २४ चौवीसवें बोल वाला असंख्यात गुणा अधिक। तेथकी १३ तेरहवें बोल वाला असंख्यातगुणा। तेथकी १६ उगणी-वे बोल वाला अनन्त गुणा। तेथकी ४ चोथे १२ वारहवें बोल वाला विशेषाहिया। तेथकी ८ आठ-वें १७ सतरवें बोल वाला विशेषाहिया। तेथकी १ पहेले २ दूजे ३ तीजे ५ पांचवें ६ छट्ठे ७ सात-वें १० दसवें ११ ग्यारवें १६ सोलवें बोलवाला

विशेषाहिया। तेथकी ६ नवमें १५ पनरवें १८ अठारवें बोल वाला विशेषाहिया। तेथकी १४ चवदवें २० बीसवें २१ इकवीसवें बोल वाला अनन्त गुणा।

पाठान्तर।

सबसे थोड़ा २३ तेइसवें २५ पचीसवें बोल वाला। तेथकी २२ बाइसवें २४ चोईसवें बोल वाला असंख्यात गुणा ज्यादा। तेथकी १६ उगणीसवें बोल वाला असंख्यात गुणा। तेथकी १३ तेरहवें बोल वाला अनन्त गुणा। तेथकी ४ चोथे बारहवें बोल वाला विशेषाहिया; तेथकी ८ आठवें १७ सतरवें बोल वाला विशेषाहिया; तेथकी १ पहेले २ दूजे ३ तीजे ५ पांचवें ६ छट्ठे ७ सातवें १० दसवें ११ ग्यारहवें १६ सोलवें बोल वाला विशेषाहिया। तेथकी ६ नवमें १५ पनरवें १८ अठारवें बोल वाला विशेषाहिया। तेथकी १४ चवदवें २० बीसवें २१ इकीसवें बोल वाला अनन्त गुणा अधिक।

पाठान्तर ।

सवसे थोडा २३ तेवीसवें २५ पचीसवें बोल वाला। तेथकी २२ वाइसवें २४ चोइसवें बोल-वाला असंख्यात गुणा। तेथकी १३ (तेरमें) बोल वाला असंख्यात गुणा। तेथकी १६ उगणीसवें बोल वाला विशेषाहिया। तेथकी ४ चोथे १२ बारहवें बोल वाला अनन्त गुणा। तेथकी ८ आठवें १७ सतरवें बोल वाला विशेषाहिया। तेथकी १ पहेले २ दुजे ३ तीजे ५ पांचवे ६ छट्ठे ७ सातवें १० दसवे ११ ग्यारवें १६ सोलवें बोल वाला विशेषाहिया। तेथकी ६ नवसे १५ पनरवें १८ अठारवें बोल वाला विशेषाहिया। तेथकी १४ चवदवें २० वीसवें २१ इकवीसवें बोल वाला अनन्त गुणा।

॥ इति पचीस बोलका थोकडा समाप्तम् ॥

प्रश्नोत्तर।

नाम	गति	जोत	काय	इन्द्रिय	पर्याय	प्राण	वेद
नारकी	नरक	पञ्चेन्द्रिय	त्रस	पाचोंही	पाच, मन, भाषा भेली	दसोंही	नपुंसक
देवता	देव	”	”	”	”	”	भवनपतिसे दूजा देवलोक तक वेद पावे दोय, तीजा देवलोकसे जाव सर्वार्थसिद्ध तक वेद पावे एक पुरुष।
एकेन्द्रिय (५ स्थावर)	तिर्यंच	एकेन्द्रिय	स्थावर, आप आपरी	एक स्पर्शेन्द्रिय	च्यार मन, भाषा टली	च्यार स्पर्श इन्द्रिय काय, स्वासोसास, आयुष्य	नपुंसक
बेइंन्द्रिय	”	बेन्द्रिय	त्रस	दोय स्पर्श, रस	पांच मन टल्यो	छव	”
तेइंन्द्रिय	”	तेन्द्रिय	”	तीन स्पर्श, रस, घ्राण	”	सात	”

नाम	गति	जात	काय	इन्द्रिय	पर्याय	प्राण	वेद
चौरेन्द्रिय	तिर्यंच	चौरेन्द्रिय	त्रस	४ स्पर्श रस घ्राण, चक्षु	पांच मन टल्यो	आठ	नपुंसक
असन्नी तिर्यंच पंचेन्द्रिय	तिर्यंचकी	तिर्यंच पञ्चेन्द्रिय	"	पांचोही	"	नव	"
सन्नी तिर्यंच पंचेन्द्रिय	तिर्यंच	पञ्चेन्द्रिय	"	"	छव	दस	तीनोंही
असन्नी (छमुर्च्छिम) मनुष्य	मनुष्य	"	"	"	च्यार पुरी बन्धी नहीं (अधूरी]	८ अधुरा श्वास लेवे तो उश्वास नहीं उश्वास लेवे तो श्वास नहीं	नपुंसक
सन्नी (गर्भज) मनुष्य	मनुष्य	पञ्चेन्द्रिय	त्रस	पाच	छव	दस	तीनोंही पुरुष, स्त्री, नपुंसक

अथ पच्चीस क्रियाका नाम तथा

भावार्थ ।

१ काइया क्रियाका २ भेद-१ अणुवरय काइया-पापसे नहीं निवर्तने से लागे। २ दुपउत्त काइया-इन्द्रियोंके इष्ट अनिष्ट विषय से नहीं निवर्तने से लागे। या अजतनासे प्रवर्तावे घणा कालसे काया वोसराया विना पाछला रह्या हुवा कायाका पुद्गल उसकी क्रिया लागे।

२ अहिगरणीया (अधिकरण) क्रियाका दो भेद—१ संजोजनाहिगरणिया-खड्ग मूशल हथियार कसि कुदाला इत्यादि संग्रह करे उनकी क्रिया लागे। २ निव्वत्तणाहि गरणिया-शस्त्र हथियार वगेरा नया बनावे तथा मरम्मत करावे उनकी क्रिया लागे।

३ पाउसिया क्रियाका दो भेद—

१ जीव पाउसिया-जीवपर द्वेष करनेसे

लागे तथा मत्सर परीणाम राखे उसकी क्रिया लागे।

२ अजीव पाउसिया-अजीवपर द्वेष करे तथा मत्सर परीणाम राखे उसकी क्रिया लागे।

४ परितावणिया क्रियाका दो भेद-

१ सहत्थ परितावणिया-आप तपे तथा दूसरा ने तपावे उसकी क्रिया लागे।

२ परहत्थ परितावणीया—दूसरा का हाथसे आपने तथा दूसराने तपावे (परितापणा उपजावे) उसकी क्रिया लागे।

५ पाणाइ वाइया क्रिया का दो भेद—

१ सहत्थ पाणाइ वाइया—खुद के हाथ से खुद का तथा दूसरे का प्राण हरे उसकी क्रिया लागे।

२ परहत्थ पाणाइ वाइया-दूसरे के हाथसे खुदका तथा दूसरे का प्राण हरावे उसकी क्रिया लागे, जीवरी हिंसा करे।

६ अपच्चखाणिया का दो भेद—१ जीव अपच्च-खाणिया २ अजीव अपच्चखाणिया—व्रत पच्चखाण किंचित मात्र पण नहीं करे चोथे गुणस्थान तक लागे।

७ आरम्भिया क्रियाका दो भेद—१ जीव आ-रम्भिया-जीवको आरम्भ वधावे। २ अजीव आरम्भिया-अजीवको आरम्भ वधावे। खेती बाग, बगीचा, मील, कल दूकान, मकान, वगेरा को आरम्भ वधावे उसकी क्रिया लागे।

८ परिग्गहिया क्रियाका दो भेद—

१ जीव परिग्गहिया-घोड़ा, ऊंठ, बेल, हाथी, दास, दासी, वगेरा को परिग्रह वधावे उसको क्रिया लागे।

२ अजीव परिग्गहिया-धन, आभूषण, कपड़ा मकान वगेराको परिग्रह वधावे उसकी क्रिया लागे।

९ माया वत्तियाका दो भेद—

१ आय भाव वंकणया-अपनी आत्माके वास्ते ठगाई करे व अपनी आत्मा का खोटा भाव छिपावे खोटा आचरण आचारे खोटा लेख लिखे।

२ परभाव वंकणया-परायाके वास्ते ठगाई करे, करावे, खोटा आचरण करे तथा करावे, खोटा लेख लिखे तथा लिखावे।

१० मिथ्या दंसण वत्तियाका दो भेद—

१ उणा इरित मिथ्यादंसण-ओछा, अधिका सर्दहे तथा परुपे उसकी क्रिया लागे।

२ तवाइरित मिथ्यादंसण-विपरीत सर्दहे तथा परुपे उसकी क्रिया लागे।

११ दिट्ठिया क्रियाका दो भेद—

१ जीव दिट्ठिया-घोड़ा, हाथी. वगेरहने देख-कर सरावे या विसरावे तो क्रिया लागे।

२ अजीव दिट्ठिया-चित्रामादि आभूषण देख-

कर सरावे या विसरावे तो क्रिया लागे।

१२ पुट्ठिया किया का दो भेद-

१ जीव पुट्ठिया। २ अजीव पुट्ठिया।

जीव अजीव के ऊपर राग द्वेष लाकर हाथ फेरे तथा खोटा भावसे प्रश्न करे (सवाल करे)

१३ पाडुच्चिया क्रियाका दो भेद-

१ जीव पाडुच्चिया-जीव को खोटो बंच्छे तथा उसपर इर्षा करे उसकी क्रिया लागे।

२ अजीव पाडुच्चिया—द्वेष वुद्धिसे अजीवपर खोटी चिन्तवना करे उसकी क्रिया लागे। बाहिर वस्तुके निमित्त से लागे जैसे-ओघा, पातरा, घर, हाट, इत्यादिकसे अथवा सामान्यतरेसुं राग द्वेष करने से तथा दूसरे की सम्पदा देखकर इर्षा करनेसे।

१४ सामंतोवणिवाईया क्रियाका दो भेद—

१ जीव सामंतो वणिवाईया २ अजीव सा-

मंतो वणिवाईया-जीव अजीव का समुदाय इकठा करना उसकी किया लागे। अपना भला पदार्थ देखकर लोगों आगे प्रशंसा करे याने पामावतो फिरे तथा अपनी वस्तुने दुसरो सरावे तो राजी हुवे तथा विसरावे तो विराजी हुवे तथा नाटक, मेला, तमासा, मनुष्यको फांसी देता (चोर मारता) देखे उसकी क्रिया लागे।

१५ साहत्थिया क्रियाका दो भेद—

१ जीव साहत्थिया—जीवने खुदरे हाथ से पकड़ कर हणे (मारे) उसकी क्रिया लागे।

२ अजीव साहित्थिया—तलवार, वन्दुक, आदि पकड़ कर हणे (मारे) उसकी क्रिया लागे।

१६ नेसत्थिया क्रिया उसका दो भेद—

१ जीव नेसत्थिया—जीव में जीव नांखनेसे जैसे वनस्पतिमें पाणी फेंके अथवा गुरु चेला

ने दूसरा सन्ता के पास व्यावच में भेजे या पुत्रने पिता दुसरी जगह भेजे या निकाल दे (वियोगसे जीव खेद पावे याने दुःख पावे) उसकी क्रिया लागे।

२ अजीव नेसत्थिया—पत्थर, तीर, धनुष इत्यादि फेंकवा से क्रिया लागे।

१७ आणा वणिया क्रियाका दो भेद—

१ जीव आणवणिया। २ अजीव आणवणिया। जीव अजीव वस्तु कोईरे पास से मंगावासे देवे या नहीं देवे उसपर रागद्वेष उपजे जीसको क्रिया लागे।

१८ वेदारणिया का दो भेद-१ जीव वेदारणिया २ अजीव वेदारणिया-जैसे सुपारी-का दो टुकड़ा करे। जीव अजीव ने काटे तथा लाणे लेजाणेकी आज्ञा देवे तथा उन का अछत्तागुण करके बेचे तथा हिंसाकारक दलाली करे।

१९ अणाभोग वत्तियाका दो भेद-

१ अणाउत्त आयणता-असावधान-पणे से वस्त्रादिक ने ग्रहण करे वा पहिरे उसकी क्रिया लागे।

२ अणाउत्तपम्मजणता-उपयोग विना पात्रादिक पुंजे उसकी क्रिया लागे। उपयोग विना शुन्य पणे तथा अज्ञानतासे लागे।

२० अणवकंख वत्तियाका दो भेद—

१ आयशरीरअणवकंखवत्तिया--खुदके शरीरसे पाप लागे वैसा काम करे अपघात करे उसकी क्रिया लागे।

२ पर शरीर अणवकंखवत्तिया-दूसराका शरीरसे पाप लागे वैसा कर्म करे परघात करे उसकी क्रिया लागे। इहलोक व परलोकसे विरुद्ध काम करे। इह लोकमें निंदा हुवे परलोक विगाड़े वेसा काम करे।

२१ पेज्जवत्तियाका दो भेद—

१ माया वत्तिया-कपटाइसे राग धरे उसकी क्रिया लागे।

२ लोभ वत्तिया-लोभसे राग धरे उसकी क्रिया लागे।

२२ दोष वत्तियाका दो भेद्—

१ कोहे—क्रोधसे क्रिया लागे।

२ माणे--मानसे क्रिया लागे।

२३ पउग्ग क्रियाका तीन भेद-१ मण पउग्ग। २ वय पउग्ग। ३ काया पउग्ग। मन वचन कायाका जोगसे कर्म ग्रहण करे याने शुभ अशुभ प्रवर्तावे।

२४ सामुदाणिया क्रियाका तीन भेद-१अणंतर सामुदाणिया-कालमें छेटी पड़े। २ परंपर सामुदाणिया-काल में छेटी नहीं पड़े। ३ तदुभय सामुदाणिया-कालमें छेटी पड़ जावे और कालमें छेटी नहीं पड़े दोनों साथ। प्रयोग क्रिया द्वारा ग्रहण किया कर्म

सामुदाणीसे खींच्या उन कर्मों का भेद च्यार तरह से करे-१ प्रकृति पणे,-२ स्थिति पणे, ३ अनुभाग पणे, ४ प्रदेश पणे, दृष्टान्त जैसे-मेदाको आलोय कर लोधो बणायो जब तो प्रयोग क्रिया लागे और पीछे लोधाने लेकर पेठो, निमकी, खाजा इत्यादिक नाना प्रकार पणे बणाया जब सामुदाणी क्रिया लागे।

(पहेलेके समय भेद करे तब अनन्तर क्रिया, दूजे समय तीजे समय भेद करे तब परंपर क्रिया)।

२५ इरियावहिया क्रिया-वीतरागी तथा केवली ने पहेले समय में लागे दूजे समय वेदे तीजे समय निर्भरे। *

इति पच्चीस क्रिया समाप्तम्।

---

*(नोट)—इरियावहिया क्रिया शुभ, बाकी चोवीस क्रिया शुभ अशुभ दोनों ही है।

अंतिम मंगलिकश्लोक—

शिवमस्तु सर्वजगतः,
परहित निरता भवन्तु भूतगणाः ।
दोषाः प्रयान्तु नाशं,
सर्वत्र सुखी भवतु लोकः ॥

दोहा—

अक्षरपद हीणो अधिक, भूलचूक कहीं होय ।
अरिहंत आतम साखसे, मिच्छामि दुक्कडं मोय ॥

इस पच्चीस बोलके थोकड़े में किसी जगह आगम सूत्र विरुद्ध आगया हो यां दृष्टि दोषसे प्रूफ सुधारने में काना मात्रा न्यूनाधिक हो गया हो तो सज्जन सुधार कर पढने की कृपा करें और हमे सूचना दें जिससे दूसरी आवृत्ति में सुधार दिया जाय यही प्रसिद्ध कर्त्ताकी विनति है ॥ इति शुभं भवतु ॥